# उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद्

## अष्टम अधिवेशन

(नवम्बर, २०-२१ २२, १९८२)

# प्रज्ञा

# स्मारिका

## बैसवारा डिग्री कालेज

## लालगंज (रायबरेली)

| | |
|---|---|
| समारोह संरक्षक | सम्मानित विशिष्ट सदस्य |
| **लाल राजेन्द्र बहादुर सिंह** | **श्री रणबहादुर सिंह** |
| स्वागताध्यक्ष | **फते बहादुर सिंह** |
| **ठा० रतन पाल सिंह** | **सुरेन्द्र बहादुर सिंह** |

# बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज, रायबरेली

## प्रबन्धकारिणी समिति

| | | |
|---|---|---|
| १– | श्री रणबहादुर सिंह | अध्यक्ष |
| २– | ,, शिवशंकर सिंह | ज्येष्ठ उपाध्यक्ष |
| ३– | ,, रामदेव सिंह | कनिष्ठ उपाध्यक्ष |
| ४– | ,, लाल राजेन्द्र बहादुर सिंह | मंत्री एवं व्यवस्थापक |
| ५– | ,, अमरेन्द्र बहादुर सिंह | सह मंत्री एवं सह व्यवस्थापक |
| ६– | ,, रमाशंकर मिश्र | सदस्य |
| ७– | ,, गया प्रसाद शुक्ल | ,, |
| ८– | ,, ईश्वर चन्द्र गुप्त | ,, |
| ९– | ,, शीतला शंकर दीक्षित | ,, |
| १०– | ,, कृष्ण बिहारी सिंह भदौरिया | ,, |
| ११– | ,, रणजीत सिंह | ,, |
| १२– | ,, फतेहबहादुर सिंह | ,, |
| १३– | ,, इन्द्र बहादुर सिंह | ,, |
| १४– | ,, डा० रामरतन सिंह चौहान | ,, |
| १५– | ,, शीतला बख्श सिंह | ,, |
| १६– | ,, राम गोपाल सिंह | ,, |
| १७– | ,, डॉ० अमल धारी सिंह | पदेन |
| १८– | ,, महादेव सिंह | प्रवक्ता |
| १९– | ,, ओम प्रकाश सिंह | ,, |
| २०– | ,, राम प्रकाश सिंह | ,, |
| २१– | ,, श्रीमती रेखा यादव | ,, |

# प्रज्ञा

## स्मारिका

## उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद्

## अटष्म् अधिवेशन

नवम्बर २०-२१-२२, १९८२

*संपादक मण्डल*

प्रो० हरेन्द्र बहादुर सिंह | प्रो० बैजनाथ विश्वकर्मा
डा० बैजनाथ सिंह | प्रो० ओमप्रकाश सिंह

## बैसवारा डिग्री कालेज

लालगंज : रायबरेली

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।
मनीषिणो मनषा पृच्छतेदु यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन् ।।

ब्रह्म वनं स ब्रह्मस वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।
मनीषिणो मनसा विब्रवीमि वो ब्रह्माध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन् ।।

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनाः ।
तदेव शुक्र तद् ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते ।
तस्मिंल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन ।।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ।।

अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रयं पुरुषं महान्तम् ।।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।।

अनन्तनामधेयाय सर्वाकारविधायिने ।
समस्तमन्त्रवाच्याय विश्वैकपतये नमः ।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

# अर्द्धनारीश्वरः



वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।

# स्वागत समिति

सर्व श्री

डा० एस० के० सिन्हा
,, जे० बी० सिंह
,, शिव बहादुर सिंह
,, विजय शंकर शुक्ल
प्रो० जीतेन्द्र सिंह
मधुकर द्विवेदी
गिरिधर गोपाल तिवारी
डा० नरेन्द्र कुमार जैन
प्रो० लक्ष्मी नारायण सिंह
मेजर डा० इकबाल बहादुर सिंह
प्रो० भूपेन्द्र देव सिंह
डॉ० शिव वरण शुक्ल
प्रो० प्रेम शंकर मिश्र
अर्जुन सिंह
विन्देश्वरी प्रसाद सिंह
रामनरेश सिंह
शमशेर बहादुर सिंह चौहान
केशव बहादुर सिंह
गंगा दयाल सिंह
राम नरेश सिंह चौहान
गिरिजा शंकर त्रिवेदी
मेड़ी लाल तिवारी
अमर नाथ सिंह
रण विजय सिंह
मुरलीधर शुक्ल
उदय भान सिंह
सीता राम सिंह
डॉ अनिल कुमार श्रीवास्तव
,, सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव
,, सर्वजीत सिंह अरोड़ा
,, एस० पी० सिंह

सर्व श्री

डा० श्रीमती विनीता सिंह
डा० हनोमान सिंह
विश्वनाथ सिंह भदौरिया
सुरेश नारायण सिंह
गिरिजा शंकर दीक्षित
जय शंकर सिंह
भगवान बख्श सिंह
राजेन्द्र सिंह
त्रिवेणी बहादुर सिंह
रवीन्द्र कुमार सिंह
गया प्रसाद त्रिवेदी
राधेमोहन गुप्त
शकुन चन्द्र गुप्त
ईश्वर चन्द्र गुप्त
गँगा राम गुप्त
कृष्ण चन्द्र गुप्त
ओमप्रकाश स्वर्णकार
पन्नालाल गुप्त
प्रशान्त कुमार दीक्षित
शेष नारायण अग्रवाल
बाबूलाल स्वर्ण कार
सेठ वसन्त लाल
शंकर (अमर रेडियोज)
भुलाने सिंह
आर० एन० गुप्त
आर० पी० गुप्त
डॉ० गोपाल स्वरूप
,, अग्रवाल होम्योपैथ

स्वागताध्यक्ष—

**डा० रतन पाल सिंह**

प्रो० राम प्रकाश सिंह सचिव

प्रो० सत्यनारायण सिंह कोषाध्यक्ष

# सम्पादकीय

- उत्तर प्रदेश दर्शन-परिषद् (अष्टम अधिवेशन) के अवसर पर 'प्रज्ञा-स्मारिका' के प्रकाशन का जो सुयोग हमें अनायास ही प्राप्त हो सका है उसके लिए हम परिषद् के कृपालु पदाधिकारियों के भूरिशः कृतज्ञ हैं जिन्होंने अधिवेशन के निमित्त बैसवारा डिग्री कालेज जैसी छोटी संस्था और लालगंज जैसे छोटे नगर को चुना।

- हम उन शुभाशंसियों एवं सहयोगियों के प्रति भी अन्तरतम से आभारी हैं जिन्होंने स्मारिका हेतु शुभ संदेश विज्ञापन तथा प्रकाशनार्थ निबन्धादि उपलब्ध कराये।

- अति अल्प समय में सुन्दर एवं त्रुटिहीन छपाई के लिए हम इसके मुद्रकों को साधुवाद देते हैं।

- हमें आशा है कि सुधी पाठक एवं विनम्र छात्र इस अंक को एक स्मृति-चिह्न के रूप में अंगीकार करेंगे और उन त्रुटियों व न्यूनताओं पर ध्यान न देंगे जो आलस्यवश या प्रमादवश जाने अनजाने हो गई या रह गई हैं।

- हम पुनः एक बार सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के इस वर्तमान अष्टम अधिवेशन की सुसम्पन्नता हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने वाले अधोलिखित समस्त महानुभावों के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं तथा कालेज द्वारा आयोजित होने वाले समस्त भावी समारोहों में सहायतार्थ निवेदन करते हैं।

अमलधारी सिंह प्राचार्य/संयोजक

सत्यनारायण सिंह, कोषाध्यक्ष

| | |
|---|---|
| श्री रतनपाल सिंह तेजगांव | ५१००.०० |
| ,, फतेह बहादुर सिंह ,, | १००१.०० |
| ,, गिरजा शंकर दीक्षित लालगंज | २०१.०० |
| ,, ओम प्रकाश स्वर्णकार ,, | २०१.०० |
| ,, सेठ शिवनारायण गुप्ता ,, | १५१.०० |
| ,, रायपुर मझिगवां | १२१.०० |
| ,, प्राचार्य इण्टर कालेज रौतापुर | १५१.०० |
| ,, ओम प्रकाश रस्तोगी | १११.०० |
| ,, राजेन्द्र बहादुर सिंह आलमपुर | १०१.०० |
| ,, अमरेन्द्र बहादुर सिंह रौतापुर | १०१.०० |
| ,, रवीन्द्र कुमार सिंह लालगंज | १०१.०० |
| ,, के० सी० गुप्ता ,, | १०१.०० |
| ,, गंगा राम गुप्ता ,, | १०१.०० |
| ,, हनुमान सिंह मुनीम जी ,, | १०१.०० |
| ,, नागेश्वर शर्मा ,, | १०१.०० |
| ,, ईश्वर चन्द्र गुप्ता ,, | १०१.०० |
| ,, राम कुमार विश्वकर्मा ,, | १०१.०० |
| ,, प्रशान्त कुमार दीक्षित ,, | १०१.०० |
| ,, प्राचार्य इ. कालेज पूरे पाण्डेय ,, | १००.०० |
| ,, मिश्रा मशीनरी स्टोर्स ,, | ५१.०० |
| ,, शिव किशोर त्रिपाठी ,, | ५१.०० |
| ,, मो० सलीम ,, | ५१.०० |
| ,, गोवर्धन सिंह ,, | ५१.०० |
| ,, राधे कृष्ण गुप्ता ,, | ५१.०० |
| ,, नूर मोहम्मद ,, | ५१.०० |
| ,, सुरेश चन्द्र रस्तोगी ,, | ५१.०० |
| ,, पंजाब स्पोर्ट्स कानपुर | ५१.०० |
| ,, शेष नारायण अग्रवाल | ५०.०० |
| ,, भुलाने सिंह | २५.०० |
| ,, बाबूलाल स्वर्णकार | २५.०० |
| ,, राजेन्द्र सिंह (सेमरपहा रोड) | २५.०० |
| ,, सेठ बसंत गुप्ता | २१.०० |
| ,, शंकर भ्रमर रेडियोज | २१.०० |
| ,, गया प्रसाद त्रिवेदी | २१.०० |

| | |
|---|---|
| श्री राधेमोहन गुप्ता | २१.०० |
| ,, शकुन चन्द्र गुप्ता | २१.०० |
| ,, अमर नाथ सिंह पूरे पाण्डेय | २१.०० |
| ,, राजेन्द्र सिंह नौबस्ता | २१.०० |
| ,, इन्द्र बहादुर सिंह | १०१.०० |
| ,, सी० एल० सिंह | ५१.०० |
| ,, राज किशोर सिंह बक्सी जी | २०१.०० |
| ,, विश्वनाथ सिंह भदौरिया | २०१.०० |
| ,, वंश बहादुर सिंह | १०१.०० |
| ,, वृजेन्द्र सिंह राठौर | २०१ ०० |
| ,, डॉ० अमल धारी सिंह प्राचार्य | १०१.०० |
| ,, डॉ० महेशसिंह (अध्यक्ष) इतिहास विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० उपेन्द्र बहादुर सिंह (अध्यक्ष) हिन्दी विभाग | ५१.०० |
| ,, डॉ० बैजनाथ (अध्यक्ष) संस्कृत विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० राकेश चन्द्र त्रिवेदी (अध्यक्ष) राजनीति विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० राम सनेही जायसवाल (अध्यक्ष) भूगोल विभाग | ५१.०० |
| ,, छोटेलाल सिंह (अध्यक्ष) अर्थशास्त्र विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० बैजनाथ विश्वकर्मा (अध्यक्ष) अंग्रेजी विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० हजारी सिंह (अध्यक्ष) समाज शास्त्र विभाग | ५१.०० |
| ,, व्रजभूषण सिंह (अध्यक्ष) सैन्य अध्ययन विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० हरेन्द्र बहादुर सिंह, हिन्दी विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० सत्यनारायण सिंह, भूगोल विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० देवेन्द्र बहादुर सिंह, हिन्दी विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० निर्मलनाथ सिंह, सैन्य अध्ययन ,, | ५१.०० |
| ,, प्रो० महादेव सिंह, भूगोल विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० ओमप्रकाश सिंह, हिन्दी विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० रामप्रकाश सिंह (अध्यक्ष) दर्शनशास्त्र विभाग | ५१.०० |
| ,, प्रो० श्रीमती रेखा यादव, अंग्रेजी विभाग | ५१.०० |

# उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् (अष्टम अधिवेशन)

की

## सफलता हेतु

# हार्दिक शुभकामनायें

- डॉ० रामलोचन सिंह
  कुलपति
  मेरठ विश्वविद्यालय।

- डॉ० हेमलता स्वरूप
  कुलपति
  कानपुर विश्वविद्यालय।

- डॉ० सत्यव्रत सिंह
  प्राक्तन कुलपति
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी।

- पं० गौरी नाथ शास्त्री
  कुलपति
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी।

- पद्मभूषण ठा० जयदेव सिंह
  भूतपूर्व प्राचार्य
  युवराजदत्त कालेज
  लखीमपुर, खीरी।

- डॉ० कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह
  प्राक्तन प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
  हिन्दी विभाग
  बड़ौदा, जोधपुर, मगध विश्वविद्यालय।

- डॉ० फतह सिंह
  प्राक्तन निदेशक
  राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर।

- डॉ० नामवर सिंह
  प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
  भारतीय भाषा विभाग
  जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली।

- डॉ० कृष्णदत्त वाजपेयी
  प्राक्तन प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (इति० विभाग)
  सागर विश्वविद्यालय सागर (म० प्र०)

- डॉ० नन्द किशोर देवराज
  प्राक्तन प्रोफेसर एवं निदेशक
  दर्शन उच्चानुशीलन केन्द्र
  काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

- शम्भु नाथ (आई० ए० एस०)
  जिलाधीश
  मेरठ।

- डॉ० सरोजिनी वार्ष्णेय
  प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र
  एवं
  प्राचार्या
  महिला महाविद्यालय
  काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

# आभार - प्रकाश

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के इस वर्तमान अष्टम अधिवेशन के अवसर पर 'प्रज्ञा-स्मारिका' को देश के दार्शनिक चिन्तकों, विद्याभिनिवेशी सुधी सहृदय आचार्यों के कर कमलों में समर्पित करते हुये अतिशय आह्लाद का अनुभव कर रहा हूँ। अधिवेशन स्थल के लिये इस कालेज का चयन किया जाना बैसवारा क्षेत्र के लिये गौरव का विषय है। धर्म पीठ स्थली, ऋषीश्वर-तपो-भूमि, शूरवीर क्रान्तिकारी साहित्यकार-प्रसविनी, दान-कर्म-वीर-जननी बैसवारा भूमि इतिहास विख्यात है। महान् उद्‌भट दार्शनिकों तथा अन्य विद्वानों का विविध विभूतियों के धनी इस बैसवारा क्षेत्र में पधारना भी गौरव की ही बात है। सिद्ध इस क्षेत्र के अन्तर्गत इस विद्या मन्दिर में परा विद्या के अधिवेशन के आयोजनार्थ हम परिषद् के अध्यक्ष तथा सचिव महोदय के बहुत ही कृतज्ञ हैं। परम श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ० कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी का हम लोगों पर अतिशय अनुग्रह अहेतुकी कृपा है। आपके प्रयास एवं निर्देशन से ही इस छोटे से कालेज में इस विशाल अधिवेशन का आयोजन संभव हो रहा है। इस समारोह की सफ़लता हेतु अपनी शुभ कामनायें एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सभी सम्मान्य महानुभावों के प्रति हम बहुशः आभारी हैं। स्वागताध्यक्ष के रूप में गुरुतर कार्यभार सहर्ष स्वीकार करने वाले ठा० रतन पाल सिंह तथा बहुल सहयोग प्रदान करने वाले ठा० फते बहादुर सिंह एवं ठा० सुरेन्द्र बहादुर सिंह के हम अनुगृहीत हैं। प्रबन्ध-तंत्र तथा स्वागत समिति के सदस्यों एवं अक्लान्त आफलोदय सौहार्द सौमनस्यभाव से कार्य करने वाले कालेज परिवार के सभी सदस्यों के प्रति मैं बहुत ही आभारी हूं। स्वल्प समय में आकर्षक साज-सज्जा के साथ 'प्रज्ञा स्मारिका' को प्रस्तुत करने वाले सम्पादक मण्डल की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। इसके प्रकाशनार्थ 'हिन्दी साहित्य भण्डार' के स्वत्वाधिकारी श्री महेन्द्र कुमार मेहरा तथा मुद्रणालय के कर्मचारीगण विशेषतः धन्यवाद के पात्र हैं। इस समारोह के लिए ३०००।—के आर्थिक अनुदान की स्वीकृति हेतु हम राज्य सरकार के बहुत ही आभारी हैं।

इस सारस्वत समारोह की सुसम्पन्नता हेतु पूर्ण संरक्षण प्रदान करने वाले माननीय लाल राजेन्द्र बहादुर सिंह तथा मनसा-वाचा-कर्मणा, प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग करने वाले समस्त सहृदय, उदारमना महानुभावों के प्रति मैं अतिशय आभार प्रकट करता हूं।

**अमलधारी सिंह**

प्राचार्य/संयोजक

# शुभकामना संदेश

ब्रह्मदत्त,
मंत्री
वित्त एवं नियोजन

विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक 12 नवम्बर, 1982

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बैसवारा डिग्री कालेज, लालगंज, रायबरेली द्वारा उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के अष्टम अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

इस अधिवेशन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के दार्शनिकों द्वारा राष्ट्रीय अखण्डता एवं कौमी एकता पर प्रभावशाली प्रकाश डाला जायेगा, मुझे ऐसी आशा है।

आयोजित अधिवेशन एवं स्मारिका की सफलता के लिये मेरी शुभकामनायें।

भवदीय,
ब्रह्मदत्त

# शुभकामना संदेश

रत्न शंकर मिश्र
कुलपति

लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

नवम्बर 6, 1982

प्रिय सिंह जी,

आपका दिनांक 26–10–82 का निमंत्रण प्राप्त हुआ अनुग्रहित हूँ।

मैं प्रभू से सदैव यही प्रार्थना करता हूँ कि बैसवारा क्षेत्र को सर्वधर्म सम्मेलन में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हो। आप सभी व्यक्तियों का अथक प्रयास राष्ट्रीय अखण्डता एवं कौमी एकता हेतु सफल हो यही कामना है।

भवदीय,

(रत्न शंकर मिश्र)

## शुभकामना संदेश

डा० रामजी सिंह
पी. एच–डी., डी. लिट.
(प्रो० गाँधी अध्ययन केन्द्र)
भूतपूर्व संसद सदस्य
अध्यक्ष अखिल भारतीय दर्शन परिषद्

भागलपुर विश्व विद्यालय,
भागलपुर

१३–११–८२

भारत में दर्शन की महान परम्परा है। आज मानव न तो सुख से जी पा रहा है और न शान्ति से मर ही पा रहा है। ऐसी आस्थाहीनता के समय में दर्शन ही प्रकाश दे सकता है।

मैं अधिवेशन की पूर्ण सफलता के लिये मंगलतम मंगल कामना करता हूँ।

हस्ताक्षर – रामजी सिंह

---

## FEROZ GANDHI COLLEGE

*Dr. S. K. Sinha.*
M. A., Ph. D.
(PRINCIPAL)
&
Member, Excutive Council,
Former Hony Professor of Pol. Science,
Kanpur University, Kanpur.
&
Ex-Dean, Faculty of Arts,
Kanpur University.

Rae Bareli, U. P.
(PIN ; 229 001)

I am glad to learn that the Baiswara Degree College, Lalganj is holding the Eighth Conference of the State Philosophical Congress.

Dr. Amal Dhari Singh Principal of the College, rightly deserves our congratulations on taking the initiative and providing a lead to his colleagues to advanced studies and research in Philosophy.

Dr Singh has not confined himself to the administrative charge of the college only but is keen to make the institution a seat of light and learning.

I wish all success to the congress and my fellow colleagues who are taking pains to organise the conference.

( Sd. S. K. SINHA )

Gram . "UPEXPORT" Kanpur
Telex : 0325-372 UPEC IN

☎ 47518, 47618, 47718, 47818 ] PBX

# THE U. P. EXPORT CORPORATION LTD.

( A STATE GOVERNMENT UNDERTAKING & RECOGNISED EXPORT HOUSE )

## उत्तर प्रदेश निर्यात निगम लि०

B-27, SARVODAYA NAGAR KANPUR - 208 005 U. P. (INDIA)

विनोद मल्होत्रा,
प्रबन्धक निदेशक

अ०गा०त०सं० : एम०डी०/14–2/2619
12 नवम्बर, 1982

प्रिय डाक्टर सिंह,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के तत्वाधान में आपके विद्यालय में अष्टम अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। मुझे अपने रायबरेली के कार्यकाल में आपकी संस्था एवं विभिन्न आयोजनों में शामिल होने का गौरव प्राप्त हुआ और मेरा यह दृढ़ मत है कि बैसवारा डिग्री कालेज बैसवारा क्षेत्र के अतीत को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समाज के सामने प्रस्तुत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इस अधिवेशन के उद्देश्य अत्यन्त सामयिक हैं और कदाचित इस समय देश को इनकी नितान्त आवश्यकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका अधिवेशन अपने उद्द्श्यों की पूर्ति में पूर्णरूपेण सफल होगा। मैं इसकी सफलता के लिये ईश्वर से मंगल कामना करता हूँ।

सद्भाव सहित,

भवदीय,
विनोद मल्होत्रा

## उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद्

### अष्टम अधिवेशन

(नवम्बर २०, २१, २२, १९८२)

# उद्घाटन भाषण

### साहित्य वाचस्पति प्रोफेसर वासुदेव सिंह

खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री

(उत्तर प्रदेश शासन)

## बैसवारा डिग्री कालेज, लालगंज,

## (रायबरेली)

卐 卐卐卐
卐 卐
卐卐卐卐卐
卐 卐
卐卐卐 卐

नमस्तस्मै भगवते वासुदेवाय वेधसे ।
पपुर्ज्ञानमयं सौम्या यन्मुखाम्बुरुहासवम् ।।

卐 卐卐卐
卐 卐
卐卐卐卐卐
卐 卐
卐卐卐 卐

# उद्घाटन भाषण



—:★:—

साहित्य वाचस्पति

**प्रो० वासुदेव सिंह**

खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री, (उत्तर प्रदेश शासन)

स्वागताध्यक्ष महोदय, परिषद् के अध्यक्ष महानुभाव, दर्शन के सम्मानित आचार्यजन, देवियों और सज्जनों।

उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के दर्शन के आचार्यों और अध्यापकों की परिषद् के इस विशिष्ट अधिवेशन के उद्घाटन को एक बहुत बड़ा सम्मान मानता हूं। इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं इसे एक महान् उत्तरदायित्व भी मानता हूँ, क्योंकि इस सारस्वत महोत्सव के उद्घाटन का अधिकारी वही है जो आप लोगों के द्वारा यहाँ किये जाने वाले सामूहिक चिन्तन और मनन में सक्रिय सहयोग दे सके। मेरा क्षेत्र दर्शन नहीं है, किन्तु इस देश में, विशेषतः भारत के हृदय, इस उत्तर प्रदेश में, तुलसी, सूर, कबीर, जायसी, दादू, चरणदास, निश्चलदास आदि सन्तों ने दर्शन को जन-जन के कंठ में गेय बनाकर उतार दिया है। इस देश में तो दर्शन ग्रामों की भक्त मंडलियों में रसमग्न होकर गाया जाता है, सुनाया जाता है और सामान्यजन के द्वारा आस्वादित होता है। दर्शन के रसग्राही जन सामान्य के नाते मैं भी दर्शन पर कुछ कहने का अधिकारी मान लिया गया होऊँ, तो यह स्वाभाविक ही है।

भारतवर्ष दर्शन की जन्मभूमि है। हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है। मैं तो मानता हूँ कि वह सम्भवतः सबसे पुरानी है। मोहेंनजोदड़ो और हड़प्पा संबंधी नवीन अनुसंधान इसको प्रमाणित कर रहे हैं। पाश्चात्य विद्वान् चीन की सभ्यता को भारत की सभ्यता से अधिक पुरानी मानते हैं। यदि इसे स्वीकार भी कर लें तो भी दर्शन के प्रसंग में वस्तुस्थिति में कोई

अन्तर नहीं पड़ता। कारण, यदि भारत की अपेक्षा चीन का इतिहास कुछ पुराना भी हो, तो भी अनेक प्रमाणों और उपलब्ध उल्लेखों से यह सिद्ध है कि दार्शनिक चिंतन का आरम्भ भारत में चीन से बहुत पहले हो चुका था। अन्य अनेक दृष्टियों से भी भारतीय सभ्यता चीन की सभ्यता से आगे थी। उदाहरण स्वरूप भारतीय ४६ अक्षरों की वर्णमाला में समग्र वाङ्मय को समेट लिया गया था, जबकि चीनियों ने प्राय: ५००० अक्षरों की वर्णमाला बनाई थी। दर्शन के क्षेत्र में चीन ने भारत को ही अपना गुरू माना था। चीन में साहित्य का आरम्भ करने वाले सम्राट् फूही माने जाते हैं। महान् दार्शनिक डाक्टर भगवान् दास के अनुसार वेदव्यास के समसामायिक थे। इनके लिखे रेखाचित्र मिले हैं। किन्तु इनके बाद ईसा पूर्व छठी शती के अन्त तक चीन के किसी दार्शनिक के होने का प्रमाण नहीं मिलता। उक्त छठी शती में वहाँ लाओत्जे और कानफ्यूसियस नाम के दो महान दार्शनिकों का आविर्भाव हुआ। ये महावीर और बुद्ध के समकालीन थे। यूनान देश में इसी समय पैथागोरस, साक्रेटीज और प्लेटो हुए थे। इस समय तक भारत में वेदों और उपनिषदों का दर्शन, बादरायण के ब्रह्मसूत्र आदि सुप्रसिद्ध हो चुके थे। डा० भगवान्दास का मत है, लाओ का मत प्राय: शुद्ध वेदान्त ही है। डाक्टर भगवान् दास ने यह भी लिखा है कि जापान में भी बौद्ध धर्म और दार्शनिक विचार बुद्धदेव के सौ-दो सौ वर्ष पीछे ही बौद्ध परिव्राजक भिक्षुओं के द्वारा पहुँच गये थे और तब से आज तक इन्हीं का वहाँ प्राबल्य और प्रचार रहा है। उन्होंने यह भी कहा है कि जापान का आदिम धर्म शिन्तो था। कुछ विद्वानों का मत है कि यह शब्द 'सिन्धु' 'हिन्दू' का ही रूपान्तर है। तिब्बत, बर्मा, श्याम, जावा, सुमात्रा, सिंहल आदि देशों का दार्शनिक चिन्तन भी भारत से ही गया है। इसके आधार पर समग्र जम्बूद्वीप के दार्शनिक चिन्तन की एकता का उद्घाटन किया जा सकता है और एशिया महाद्वीप के अनेक देशों की सांस्कृतिक एकता का अधिष्ठान तैयार किया जा सकता है। इस परिषद् में इस दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए।

प्राचीनता ही भारत के दर्शन की प्रमुख विशेषता नहीं है, उसकी व्यावर्त विशेपता है आचरण सापेक्षता। अपने समय के दर्शन के विशिष्ठ विद्वान् डाक्टर जयदेव सिंह का यह मत इस प्रसंग में उद्धरणीय है.—

'भारत के लिए दर्शन केवल चिंतन-सरणि नहीं है, अपितु जीवन-सरणि है। न तो यह निरर्थक कौतूहल से प्रसूत हुआ है और न यह बौद्धिक व्यायाम मात्र है। यहां प्रत्येक दर्शन धर्म है और प्रत्येक धर्म का दार्शनिक आधार है।··· यहाँ तो दार्शनिक वह माना जाता था जो जीवन के रहस्य को जानने के लिए एक गम्भीर आन्तरिक प्रेरणा से प्रणोदित होता था, जो तीव्र आध्यात्मिक साधना में व्यस्त रहता था और जो अपने जीवन को रूपान्तरित कर प्रकाश का दर्शन करता था। अपने समकालीन जनों के लिए करुणा से प्रेरित होकर जिस सत्य का वह अनुभव करता था उसे मानव की तार्किक बुद्धि को अवगत कराने का प्रयत्न करता था। इस प्रकार इस देश में दर्शन का आविर्भाव हुआ।"

छांदोग्य उपनिषद् में सनत्कुमार के पास नारद के जाने और शिक्षा देने के लिए प्रार्थना करने की कथा आई है। नारद ने कहा – मैं शोक में पड़ा हूँ, मुझे शोक के पार उतारिये। इस पर करुणा से प्रेरित होकर सनत्कुमार ने उनको आत्मा को पहचान कराने वाला ज्ञान दिया। ऐसे आख्यानों में इस देश में दर्शन के अभ्युदय की कहानी छिपी पड़ी है। इसी प्रकार कठोपनिषद् में नचिकेता और यम का सम्वाद तथा बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के संवाद में जिस तत्व का निर्वचन किया गया है वही आत्मविद्या रूपी परम श्रेय की प्राप्ति का साधन है। इन संवादों में यह ध्वनित है कि इस देश का दर्शन खाने-पीने, नाचने, गाने, हाथी-घोड़े, मोटर राज प्रासाद विपुल ऐश्वर्य-भोग, महल-अटारी आदि को निर्महत्त्व समझता है। वह नचिकेता के शब्दों में कहता है –न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। वित्त से मनुष्य कभी तृप्त नहीं हो सकता। क्योंकि मैत्रेयी के शब्दों में येनाहं न अमृता स्यां किं अहं तेन कुर्याम है अर्थात् वह लेकर क्या करूँगी जिससे मृत्यु का भय न छूटे। आज के इस अर्थ प्रधान-युग में ये उपदेश कितने कल्याणकारी हो सकते हैं यह कहने की आवश्यकता नहीं। मेरा विश्वास है भावी विश्व मानव समाज के नवनिर्माण की यही आधार शिला होगी। इस मानव कल्याण की दृष्टि के कारण हमारे देश में दर्शन को जो सम्मान मिला है, वह संसार के किसी देश में दर्शन को प्राप्त नहीं हुआ है। सांख्यदर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल को इस देश में भगवान् के चौबीस अवतारों में गिना गया है।

वेद उपनिषदों के काल के पश्चात् बुद्ध और महावीर का काल आता है बुद्ध का दर्शन भी लोक का दुःख दूर करने के लिए परम कारुण्य से प्रेरित है। बुद्ध के जीवनचरित्र का जिन्होंने अनुशीलन किया है, वे जानते हैं कि किस प्रकार उन्होंने विपुल राज्य और ऐश्वर्य, प्रियतमा यशोधरा और शिशु राहुल को छोड़कर नगर के फाटक के बाहर खड़े होकर यह प्रतिज्ञा की थी—

जननमरणयोः अदृष्टपारः न पुनः अहं कपिलाऽह्वयं प्रवेष्टा।

जन्म मृत्यु के रहस्य का पता लगाये बिना राजधानी कपिलवस्तु में पुनः पैर नहीं रखूँगा। इन्हीं भगवान् बुद्ध के दर्शन ने दुखः क्या हैं, दुखः का हेतु क्या है, दुखः की हानि क्या है. दुखः की हानि का उपाय क्या है, ये चार अर्थ सत्य जगत् को दिये। भगवान् महावीर के जैन दर्शन में भी बंध का हेतु आस्रव, तृष्णा, उसके संवर से अर्थात् निरोध से मोक्ष प्राप्ति की साधना विस्तार से बताई गई है –

आस्रवो बंधहेतुः स्यात्, संवरो मोक्षकारणम्।
इति इयं आर्हती मुष्टिः अन्यद् अस्याः प्रपंचनम्॥

इसी आर्हती मुट्ठी में सारा जैनदर्शन समाहित है। इसी से मिलती जुलती बात वेदान्त के इस प्रसिद्ध श्लोक में कही गयी है –

श्लोकार्द्धं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं शास्त्रकोटिभिः।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः॥

जो कोटि शास्त्रों में कहा गया है, उसे आधे श्लोक में कहता हूँ। ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है। जीव ब्रह्म है. अन्य कुछ नहीं।

भारत के प्रसिद्ध षड् दर्शनों का प्रेरणा-स्रोत यही करुणा, यही दुखः जिहासा अथवा बंधन से छूटने की इच्छा है। न्यायवैशेषिक, सांख्य -योग, पूर्वमोमांसा, वेदान्त सबका मूल स्वर यही है। सब दर्शन सबसे बड़े पदार्थ ब्रह्म की खोज की दिशा में प्रेरित करते हैं।

न्याय दर्शन में इसका प्रमाण इन शब्दों में मिलता है—

दुख-जन्म—प्रवृत्ति-दोष-मिथ्याज्ञानानाम् उत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायाद् अपवर्गः, अर्थात् तत्वज्ञान होने से दुखः और उसके कारणों की परम्परा का उपाय या क्षय होकर मिथ्या ज्ञान मिट जाता है. सब क्लेश मिट जाते हैं और मोक्ष, निःश्रेयस आदि नामों वाला अपवर्ग प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार वैशेषिक में धर्म का जो स्वरूप बतलाया गया है वह भी दुखः निरोध का सूचक है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

जिससे अभ्युदय और निश्रेपस दोनों की सिद्धि हो, वह धर्म है। जहाँ अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि है, वहाँ दुःख कैसे रह सकता है।

महर्षि कपिल के सांख्य दर्शन का पहला ही सूत्र है :—

"अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृतिः अत्यन्तपुरुषार्थः। अर्थात् दैहिक, दैविक भौतिक तीनों प्रकार के दुखों की अत्यन्त निवृत्ति ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है और सांख्य का कथन है, ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है—ज्ञानेन चापवर्गः। सांख्य दर्शन को ख्याति दर्शन भी कहते हैं। कारण !सम्यक् ख्यानं संख्यानं, तद्एव सांख्या ख्याति-का अर्थ है ज्ञान, व्याख्यान एवं गणन।

योगदर्शन के अनुसार सब दुखों का मूल कारण द्रष्टा और द्रश्य प्रकृति और मिथ्या ज्ञान या अविद्या है। इसको दूर करने का एक मात्र उपाय सच्चा ज्ञान है जिसको यह ज्ञान हो जाता है सर्वत्र अपने को ही देखता है —एकमेवाद्वितीयं का अनुभव करता है। ततः क्लेशकर्मनिवत्तिः। पुरुषार्थ-शून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं, स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति। (पातंजल योगसूत्र, अ० ४ सू० ३४)

महर्षि जैमिनि के पूर्वमीमांसा में कहा गया है, धर्म के सच्चे स्वरूप को खोजना और जानना चाहिए। धर्म के सच्चे ज्ञान से और तदनुसार आचरण से ही निश्रेयस मिलता है, फलतः दुखः की निवृत्ति होती है। मीमांसा में निर्दिष्ट निःश्रेयस को स्वः शब्द से भी अभिहित किया गया है। जिस सुख में दुखः का क्लेश भी मिश्रित न हो, जिसका कभी लोप न हो, जो कभी दुखः से ग्रस्त न हो, जो अपनी अभिलाषा के आधीन हो, उस अवस्था को निःश्रेयस अथवा मोक्ष का सूचक "स्व' पद से अभिहित किया गया है —

यन्न दुखेःन संभिन्नं, न च ग्रस्तमनंतरम्।
अभिलाषोपनीतं तत् पदं स्वः पदास्पदम्॥

(श्लोक वार्त्तिक)

वेदान्त, जिसे उत्तरमीमांसा कहते हैं, सब दर्शनों का सिरमौर माना गया है । बादरायण के ब्रह्मसूत्र इस दर्शन स्रोत या आधार कहे जा सकते हैं । वेद के ज्ञान की पराकष्ठा जिसमें पाई जाय वही है वेदान्त दर्शन । वेदान्त का आदेश है—अथातो ब्रह्म जिज्ञासा, ब्रह्म की सबमें बड़े पदार्थ की भूमा की खोज करनी चाहिए, जानना चाहिए । ब्रह्म को जानने वाला परम तत्त्व को पा लेता है । वह जो ब्रह्म सदा से ही था, वही ब्रह्म फिर हो जाता है, वही बना रहता है—

"ब्रह्मविद् आप्नोति परम् ।

ब्रह्मैव सन् ब्रह्मैवैति । ब्रह्मवेद ब्रह्मवदेव भवति ।

भगवत्पाद शंकराचार्य ने बादरायण के वेदान्त सूत्रों की अद्वैतवादी व्याख्या की जो जगत्प्रसिद्ध है । शंकराचार्य के अद्वैतवाद का खंड़न कर रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतबाद, मध्वाचार्य ने अद्वैतवाद, विष्णुस्वामी और उनके परवर्ती अनुयायी वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद, पुष्टि मार्ग और निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैतावाद का प्रवर्तन किया । मध्वाचार्य का दर्शन ही चैतन्य महाप्रभु की दिव्य साधना का अवलंब पाकर अचित्य भेदाभेदवादी दर्शन के रूप में विकसित हुआ । इन वैष्णव दर्शनों ने हमारे देश की मध्यकालीन विविध कलाओं—काव्य संगीत, मूर्तिकला, स्थापत्य आदि पर गहरा प्रभाव डाला । साहित्य और कलाओं का नव्योत्थान हुआ ।

वैष्णव दर्शनों के समानान्तर शैव दर्शन की कुछ सारणियों का भी विकास हुआ । उनका प्रभाव हमारे देश के सौन्दर्य-दर्शन पर विशेष रूप से पड़ा । विद्वज्जन इस अधिवेशन में उस पर विचार करेंगे ही ।

हमारे दर्शन के इन आचार्यों–रामानुज, निंबार्क, वल्लभ और मध्व—ने इस देश की परीधीनता और संकट के काल में राष्ट् को भक्ति का महान् अवलंब प्रदान किया जिससे देश और धर्म की रक्षा हुई । इन आचार्यों ने ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय कर वेदान्त को नया रूप दिया—

वेदबुद्धया तु दासोऽहं जीवबुद्धया त्वदंशकः ।

आत्मबुद्धया त्वमेवाऽह इति वेदान्तडिंडिमः ।।

भगवान् का अश हूँ, आत्मा की दृष्टि से भगवान् से अभिन्न हूँ—यह वेदान्त का घोष है ।

यहां यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे दर्शन लोक-जीवन की उपेक्षा नहीं करते । गीता में ब्रह्मविद्या को राज विद्या कहा गया है । इसका अर्थ है, यह दर्शन या ब्रह्मविद्या इहलोक और परलोक दोनों को बनाने वाली है । आन्वीक्षिकी त्रयी, वार्ता दण्डनीति आदि सब दर्शन के पेट में समाये हुए हैं । कौटिल्य ने कहा है, सब विद्या और सब विनय का हेतु इन्द्रियजय है । दर्शन की निधि

और इन्द्रियजय में अन्योन्याश्रय संबंध माना गया है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में यह भी कहा है कि कोई व्यक्ति चाहे चारों समुद्रों से घिरी हुई पृथ्वी का ही मालिक क्यों न हो जाय चतुरुदधिमाला मेखलाया भुवो भर्ता। यदि उसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर आत्मविद्या का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया तो वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि राजनीति में दर्शन अनिवार्य है। रूसो के दर्शन के आधार पर फ्रांस में और फिर यूरोपीय देशों में लोकतन्त्र की उद्भावना हुई। हमारे देश में भी उपनिषद् और गीता के श्लोकों का पाठ करते हुए क्रान्तिकारी युवक फांसी के तख्ते पर झूल जाते थे। भारत के स्वतन्त्रता-आन्दोलन को सशक्त प्रेरणा प्रदान करने के लिए लोकमान्य तिलक ने गीता की कर्मयोग-परक टीका की। महात्मा गांधी ने भी गीता के अनासक्ति योग को अपने जीवन का प्रेरणा स्रोत बनाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस देश में पश्चिम से और साम्यवादी-दर्शनों का चिंतन आया। इस वैचारिक संघात में विचारकों के सामने मुख्य समस्या थी—देश में संस्थापित लोकतन्त्र की भारत की अपनी अस्मिता के आधार पर रक्षा। इस समस्या को लेकर इस प्रदेश के जिन राजनीतिक नेताओं ने गम्भीर चिंतन किया, उसमें आचार्य नरेन्द्र देव, डाक्टर सम्पूर्णानन्द तथा डाक्टर राम मनोहर लोहिया विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मेरा आप सब दार्शनिकों से अनुरोध है कि आप अपने देश की दार्शनिक भूमिका पर ऐसा तेजस्वी मौलिक चिंतन करें जिससे हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हों, सामाजिक वैषम्य दूर हो, और जन-जीवन सब प्रकार के अभावों से मुक्त होकर सदाचार के मार्ग पर चले—उच्चतम जीवन-मूल्यों को ग्रहण करें। आवश्यकता इस बात की है कि नैतिकता राजनीति पर अनुभवी रंग चढ़ाये और मंत्रियों, मंत्रि परिषदों, संसदों और व्यवस्थापिका सभाओं में सर्वमान्य बने। इस दिशा में आपका दार्शनिक नव-चिन्तन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। इस निवेदन के साथ मैं इस परिषद् के अधिवेशन का उद्घाटन करता हूं।

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के अष्टम अधिवेशन

पर

हार्दिक

# स्वागत

**ठा० रतन पाल सिंह**

तेजगाँव, रायबरेली

# स्वागत भाषण

**समादरित सज्जनों !**

जब हृदय भावों से भर जाता है और वाणी मूक हो जाती है, आज का यह अवसर भी कुछ ऐसा ही है।

हमारी परम्परा के अनुकूल महानुभावों के दर्शन, उनके बहुमूल्य विचारों के श्रवण एवं उनके आतिथ्य सत्कार का सहयोग बड़े ही सौभाग्य से प्राप्त होता है वह भी अपनी भूमि पर अपनी धूलि पर।

आप लोगों ने मुझे इस महान उत्तरदायित्व के निर्वहन का आदेश दिया है जो मेरी असमर्थता जानते हुए भी आप लोगों के महान स्नेह का सूचक है।

मेरे पास आप लोगों के स्नेह का बल है आपकी सहानुभूति का संवल है अतएव इसकी सफलता आपकी ही सफलता है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि महान दार्शनिकों विद्वान मंडली एवं समाज सेवियों के अतिरिक्त भविष्य के दृष्टा कवियों की उपस्थिति से सद्भावनाओं, सद्विचारों के साथ ज्ञान का अपूर्व पुण्य सलिला भागीरथी प्रवाहित होगी। संगीतमय जमुना के साथ सारा जन गण मन उसमें सद्य स्नात हो और धन्य-धन्य होगा। और इतना ही नहीं हमारा यह धरातल तीर्थराज प्रयाग की भाँति पावन हो उठेगा।

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद की इस गोष्ठी की सफलता के लिए हम एक बार महान विभूतियों के साथ-साथ उन सभी लोगों का स्वागत करते हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जाने अनजाने ना जाने किन प्रयासों से इस स्वर्णिम स्वप्न को साकार कर रहे हैं।

एक बार सभी उपस्थित विभूतियों का हम अपनी और कालेज के व्यवस्थापक की ओर से, कार्यकारिणी के सदस्यों की ओर से तथा क्षेत्र के हर व्यक्ति की ओर से स्वागत करते हैं।

**धन्यवाद !**

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के अष्टम अधिवेशन

पर

हार्दिक

# धन्यवाद

**ठा० सुरेन्द्र बहादुर सिंह**

**तेजगाँव, रायबरेली**

# धन्यवाद ज्ञापन !!

**समादरित सज्जन वृन्द !**

हमें शब्द नहीं मिलते जिनके द्वारा मैं उपस्थित महान् विद्या विशारदों, साहित्यिकों, दार्शनिकों एवं भविष्य द्रष्टा कवियों के प्रति अपने आभार का उद्‌गार कर पाऊँ जिनकी उपस्थिति से हमारा यह बैसवारा कालेज ही नहीं, वरन् हमारा सम्पूर्ण क्षेत्र विभूषित एवं गौरवान्वित हुआ है।

ऐसे सुअवसर पर उन सभी विभूतियों के प्रति अपना, अपने क्षेत्र के हर व्यक्ति का आभार प्रदर्शन करूँगा जिनके अथक परिश्रम से यह सौभाग्य शाली समारोह सम्पन्न हो पाया है।

जिन प्रेमी व्यक्तियों ने यहाँ पधारकर बहुमूल्य ज्ञान का अर्जन किया है, उनके भी हम हृदय से आभारी हैं।

और अन्त में हम श्रद्धा के फूल अपने चाचा श्री राजेन्द्र वहादुर सिंह जी (लाल साहब, आलमपुर) के चरणों में चढ़ाये विना सन्तोष नहीं पा रहे हैं। जिनकी प्रेरणा के स्वप्न साकार हुए हैं और जिन्होंने कृपा पूर्वक मुझ बच्चे को इस पुनीत कार्य में सेवा करने का सुयोग प्रदान किया है।

कालेज के संयोजकों एवं व्यवस्था करने वाले हर व्यक्ति के प्रति हम ऋणी हैं और एक बार फिर आगन्तुक विभूतियों से अनुरोध है कि समय-समय पर हमें ऐसे शुभ अवसरों से कृतज्ञ करें। इस अवसर पर आपके सामने वस्तुस्थिति का निरूपण न कर सन्तुष्ट नहीं हो पा रहा हूं और वह यह है कि यह कार्य मेरे आदरणीय पिताजी श्री रतन पाल सिंह जी के द्वारा सम्पादित होने वाला था परन्तु अनेक व्यस्तताओं के कारण यद्यपि उनकी बड़ी आकांक्षा थी किन्तु आप लोगों की सेवा में उपस्थित होने का मुझे उनका आदेश हुआ है कि मैं हर प्रकार आपकी सेवा में उपस्थित हो सकूं। उन्होंने इस समारोह की सफलता के लिए हार्दिक कामना प्रकट की है।

**धन्यवाद !**

# शाँति की खोज में भारतीय संस्कृति की भूमिका

**देवेन्द्र बहादुर सिंह**

विलासिता, विध्वंस, एवं अशाँति के उच्च शिखर पर से पतितोन्मुख मानव आज शाँति के अन्वेषण में लीन है, पिपासित है। परन्तु उसका यह प्रयासमात्र क्षितिज स्पर्श की चेष्टा की भाँति उसे आकर्षित करती और पुनः उस पर कटाक्ष करती चली जा रही है।

यहाँ क्या कारण है मनुष्य ने खोज में आनन्द न लेकर, आनन्द की खोज में अपना जीवन लगा डाला।

खोज किसकी, अन्वेषण किसका, भौतिकवादी संसार के नश्वर आकर्षणों का, जिसकी सीमा तृप्ति में नहीं अतृप्ति में है, शाँति में नहीं, अशाँति में है, निर्माण में नही विनाश में है या चिर-सारस्वत ब्रह्म के अन्वेषण में आत्मा का समर्पण।

हमारी संस्कृति एवं हमारी शिक्षा प्रणाली ने प्रारम्भ से ही त्याग भोग बलिदान के कठोरधरातल पर शिशु को ना ब्रह्मचर्य एवं आचरण का सम्बल ले आत्मा की जागृति-हेतु ज्ञान का निरुपण किया है जबकि पाश्चात्य संस्कृति ने भौतिकवादी उपलब्धियों के पीछे शिक्षा की प्रणाली को घसीटा कहें, और पाया है अन्त में उदासीनता अतृप्ति।

भौतिकवादी उपलब्धियों की चरम सीमा पर आसीन पाश्चात्य देशों के नवयुवक हिप्पी बनने को बाध्य हो रहे है और इस प्रकार प्रमाणित कर रहें कि भारतीय संस्कृति की गोद में ही शाँति का अमर वृक्ष मुक्ति का फल दे सकता है।

संस्कृति है क्या, जीवनयापन की प्रणाली ··और यही प्रणाली भारत को उसके महर्षियों से थाती के रूप में मिली है और वही शिक्षा प्रणाली जिसमें त्याग, संयम, स्वस्थ जीवन, साधारण एवं सद्बुद्धि का समावेश है, वही हमें शाँति की ओर ले जा सकती है हम दुर्भायवश साक्षर होना दोनो एक सा समझ बैठे हैं। शिक्षा तो वही जो अमरत्व की प्राप्ति में ज्ञान का आविर्भाव कर सके और वह मात्र हमारी संस्कृति की मौलिक विशेषता है।

# 'बैसवारे के इतिहास की एक झलक'

उत्तर प्रदेश में गंगा व सई के मध्य रायबरेली का पश्चिमी भाग तथा उन्नाव का पूर्वी भाग बैसवारे के नाम से प्रख्यात है। इस क्षेत्र में महाराज तिलोक चन्द्र जी तथा राणा वेनी माधव सरीखे वीरों ने जन्म लेकर इसे गौर्वान्वित किया है। हिन्दी के लब्ध-ख्याति विद्वान श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा संस्कृत के धुरन्धर विद्वान पं० रघुनन्दन प्रसाद शर्मा प्रभृति विद्वानों ने जन्म लेकर साहित्यिक क्षेत्र में इस क्षेत्र को गौर्वान्वित किया है।

बैसवारा भूभाग में बैसक्षत्रियों का बाहुल्य है तथा इन्हीं का यहाँ राज्य था अतः यह भूभाग बैसवारा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बैस क्षत्रिय वंश के विषय में अनेक भ्रांतियाँ हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि कभी किसी इतिहासकर ने इस राजवंश के विषय में खोज बीन करने का प्रयास नहीं किया। इस भूखण्ड में बैसों की उत्पत्ति के विषय में अनेक जन श्रुतियाँ हैं जैसे इनका कहना कहना है कि ये लोग लव के वंशज हैं तथा इनका गोत्र भार. द्वाज है। इनके मुख्य स्थान लावल कोट (लाहौर) शालिवाहन कोट (श्याल कोट) कान्य कुब्ज कोट (कन्नौज) मूंगी पट्टन (टोंका) तथा गाहो मुंज (इटावा) में थे।

बैसवारे के बैस क्षत्रिय अपने को नागवंशी कहते हैं। उनका यह मत है कि उनके पूर्वज महाराज शालिवाहन ने शक सम्वत चलाया। यहाँ श्रावण मास में पंचमी को नाग पूजा होती है तथा बहने गुड्डे बनाकर डालती हैं और उनके भाई डंडों से पीटते हैं। इस सम्बन्ध में यह जनश्रुति है कि बंगाल के गौड़ राजा शशांक ने कन्नौज के राजा को मार डाला तथा महाराज हर्ष वर्धन की बहन राज्यश्री को कैद कर लिया। हर्ष के बड़े भाई राज्य वर्धन को भी मार डाला इस घटना से क्षुब्ध होकर महाराज हर्ष ने प्रतिज्ञा की तथा गौड़ों को परास्त किया। उसी स्मृति में गौड़ों को गुड़िया के रूप में बहनों के भाई पीटते हैं तथा आनन्द मनाते हैं इसी प्रकार दुर्गा पूजा कर्णवेध संस्कार तथा शिव पूजा इनकी मुख्य विशेषतायें हैं। इन्हीं जन श्रुतयों एवं परम्पराओं के अधार पर इस वंश के विषय में छानबीन की जा सकती है।

यह तो निश्चित है कि यह वंश प्राचीन क्षत्रियवशों में प्रतिष्ठित अवश्य रहा है। क्योंकि इस वंश के लोग अपने को नागवंशी एवं शालिवाहन का वंशज कहते हैं शाके शालिवाहन को अपना सम्वत् बताते हैं। यदि इनका कोई अतीत का इतिहास न होता तो इनमें अपने वंश की परम्परागत स्मृतियाँ शेष न रहती।

उपरोक्त संदर्भ में यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत में कोई ऐसा क्षत्रिय बंश या अन्य वंश नहीं है जो अपने को नागवंशी कहता हो अथवा शक सम्वत को अपने पूर्वज शालिवाहन द्वारा चलाया हुआ बताता हो। यदि इसे असत्य भी मान लिया जाय तो किसी अन्य वश ने शक सम्वत पर अपने वंश के प्रभुत्व का दावा क्यों नहीं किया। एक ओर यह वंश शक सम्वत को अपना सम्वत बताता है, दूसरी ओर इतिहासकारों का मत है कि यह विदेशी शकों का चलाया हुआ है। यदि यह सम्वत विदेशी शकों का चलाया हुआ होता तो भारत इसे कदापि अपने ज्योतिष ग्रन्थों में स्थान न देता। विक्रमी सम्वत के साथ-साथ शाके शालिवाहन सम्वत का प्रचलन ही सिद्ध करता है कि दोनों सम्वत भारतीय हिन्दू राजाओं के चलाये हुये हैं।

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वान स्वाँग ने अपनी पुस्तक में महाराज हर्षवर्धन को बैस क्षत्रिय लिखा है। इसी पुस्तक में एक वर्णन यह भी है कि कौशल के राजा प्रसेनजित के पुत्र विरुद्धक ने वैशाली पर आक्रमण करके तहस-नहस कर दिया इस नगर के चार राजपुरुष विभिन्न दिशाओं में चले गये। इन शाक्य वंशी राजपुरषों ने छद्मनाम से विभिन्न राज्य स्थापित कर लिये।

इनमें से एक ने हिमालय की तराई में मौरियगण राज्य की स्थापना की । चन्द्रगुप्त मौर्य इसी वंश का था सौराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में भी अपना राजवंश चलाया । दक्षिण के शाक्य वंशी राजा का शकों से युद्ध का वर्णन इतिहास सिद्ध है ।

प्रसिद्ध इतिहासकार आर० सी० दत्त ने भी इस प्रकार का वर्णन किया है कि चौथे राजकुमार ने हिमालय के उत्तर में किसी नाग कन्या से विवाह किया तथा नागों की सहायता से उद्यान (कश्मीर) को अधिकृत कर लिया । कालान्तर में यही वंश नाग कन्या से उत्पन्न होने के कारण अपने को नागवंशी कहने लगा । एक बार महात्मा गौतम बुद्ध कश्मीर के राजा के यहाँ गये । राजा अनुपस्थित था परन्तु बातचीत में राज माता से बुद्ध ने बताया कि उसका पुत्र शाक्यवंशी है नागवंशी नहीं है । सम्भवतः शाक्य वंशी इसीलिए अपने को कालान्तर में नाग वंशी मानते चले आये हों ।

यह भी इतिहास सिद्ध है कि प्राचीनकाल में मेसपोटामियाँ, आर्मेनियाँ पररूिया तथा कश्यप सागर के उत्तर तक हिन्दू राज्य स्थापित थे । यही कारण है कि महात्मा बुद्ध को यहाँ पर अपना धर्म प्रचार करने में सरलता हुई । मध्य एशिया के ये समस्त हिन्दू राज्य जिनका विवरण ह्वानसांग ने भी किया है सम्भवत शाक्य वंशी ही थे । ईरान को पार दिया प्रदेश (एक देश) का नाम गुर्जर प्रदेश था यहाँ के राजाओं को उपाधि राव । थी व गोत्र भारद्वाज था । इनका उपनाम देव पुत्र भी था (i) इनके मध्यकालीन नरेश भारद्वाज गोत्री राजा शालिवाहन के वंशज कहे जाते हैं । निस्सदेह यह वंश ईरान के पारद नरेशों से सम्बन्धित था ।

मुगल सम्राट बाबर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक बाबरनामा में कुछ ऐसे नाम दिये है जिनके साथ वैंश शब्द जुड़ा है जैसे मिर्जा वैंस, खान वैंस लांगरी वैंस आदि । इससे यह आभाषित होता है कि हिमालय के उस पार के शाक्य वशी अपने को वैंस अवश्य लिखते रहे होगें । यही कारण है कि धर्म परिवर्तन के बाद भी उनके नाम के साथ वैंस शब्द शेष रह गया । सिक्खों में भी वैंस उपनाम पाया जाता है । इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैंस क्षत्रिय आज भी बड़ी संख्या में निवास करते हैं ।

अन्त में पाठकों से विनय निवेदन है कि मैं कोई इतिरास विद नहीं हूं और न किसी ऐतिहासिक खोज का मेरा दावा ही है । परन्तु विभिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन से मुझे कुछ बातें ऐसी प्रतीत हुई जिनका वर्णन करना मैंने उपयुक्त समझा । इतिहास विदों से मेरा निवेदन है कि उपरोक्त संदर्भों के आधार पर या अन्य प्रकार से इस वंश के गौरवशाली अतीत की सम्भावनाओं पर प्रकाश डालें ।


इन्द्रबहादुर सिंह, भूतपूर्व चेयरमैन (टाउन एरिया)
तथा सदस्य प्रबन्ध समिति वैंसवारा डिग्री कालेज,
लालगंज, रायबरेली


---

(१) ज० वंकिधाम प्रथम जिल्द, ऐसियाटिक सोसाइटी के १९११ के जनरल पृष्ठ ३११, जेनोला सौरियल के लेख ।

# PLEASURE OF PURSUIT & PURSUIT OF PLEASURE

## BY SURENDRA BAHADUR SINGH, M. Com.

The only difference, in the most calculated words, between the achievements through our culture and ways of ineulcation and those of western or widely known as modern, is while our sages have preached and practised attainment of pleasure in pursuit of Pleasure copeople have under the intoxicating influence of this exercise completely ming led and mixed these two aspects into oné and have taken for granted pleasure and happiness to be one and the same thing.

As a matter of fact. happiness starts, where pleasure ends. Happiness is related with soul whereas pleasure is related with senses. Satisfaction of the former is permanent while that of the latter decaying and dying Achievement of first gives immortality and of the second frustration.

This is why Lord Budda, Mahabir, Prahlad, Dhruba and Mira Bai all kicked the Pleasure of palace and kissed the solitary call of eternity. This quest of eternity and this achievement of unification is the pleasure which is in pursuit and when it is achieved the pleasure is changed into happiness.

Unlike our culture, the western culture has always the pursuit of plea·ure and therefore our way of inculcation was embodied with Brahmachmacharya good conduct, sacrifice yoga and devotion, western, culture and way of teaching had been technology, commerce. politics and all that canb and a man to the worldly gain

The result had been obvious Senses being the abode of decay, destruction and mortality breed frustration and lamentation whereas soul being immortal, when enriched and Supreme source, remained the source of permanence and perionnial happiness, distributing contentment

Discoursees, teachings of great men and blessings of learned and men of knowledge provide us light for this quest, and for this pursuit and we are fortunate that in our Baiswara college this light is going to Ill uminate the wandering souls.

This will obviously help the people otherwise the day is not very far when frustrated souls, dropped from the highest height of materialistic achievements will fall to the deepest depth and will fill in this world with none but all, H I P P I N E S S'

★

# उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद्

## (सामान्य परिचय)

इस संस्था की स्थापना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सन् १९७३ ई० में और इन्डियन फिलासाफीकिल कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन १९७४ के अवसर पर इसका संविधान तैयार किया गया। रास्ट्रीय स्तर की दो संस्थाओं के रहते हुये भी क्षेत्रीय स्तर पर इस तरह की संस्था की आवश्यकता इसी से सिद्ध होती है कि केरल, गुजरात, विहार आदि प्रदेशों में इस स्तर की संस्थायें अब स्थापित हो गई हैं। उत्तर प्रदेश और दिल्ली राज्य के दर्शन शास्त्र के प्राध्यापकों और सभी रुचि सम्पंन्न चिन्तन-मननशील व्यक्तियों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रमुख प्राध्यापकों में आई आई. टी. के डा. राजेन्द्र प्रसाद, दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० आर० सी० पाण्डेय एवं डा० के० के० मित्तल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डा० आर० के० त्रिपाठी, डा० एन० एस० एस० रमन और डा० देवराज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संगमलाल पांडे. गोरखपुर विश्वविद्यालय की डा० लक्ष्मी सक्सेना, और बनारस के स्मृतिशेष मनीषी डा० बी० एल० आत्रेय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संस्था का पंजीयन लखनऊ में २१-४-१९७६ ई० को उत्तर प्रदेश सोसाइटीज ऐक्ट के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन संख्या ७२। १९७६-७७ पर किया गया।

परिषद के संविधान में उल्लिखित उसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है—

१—उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली राज्य में दर्शनशास्त्र की शिक्षा और अध्ययन अध्यापन का प्रसार-प्रचार।

२—विचार गोष्ठियों, सम्मेलनों, व्याख्यानों और कार्यशालाओं आदि की व्यवस्था।

३—विश्वविद्यालयेतर स्कूलों-कालेजों में दर्शनशास्त्र के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था को प्रोत्साहन।

४—दर्शन-विषयक पुस्तकों, पत्रिकाओं, प्रपत्रों, लेखों आदि का प्रकाशन।

५—उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति में जो कुछ सहायक हो, उस सबकी समुचित व्यवस्था।

परिषद के पिछले वार्षिक अधिवेशन क्रमशः निम्न विवरणानुसार सम्पन्न हुये।

| वर्ष | स्थान | अध्यक्ष | अन्य विवरण |
| --- | --- | --- | --- |
| १-१९७३ | राजपुर (देहरादून) | डा. एन. के देवराज | कीर्ति शेष स्वामी गोविन्द प्रकाश जी द्वारा आमन्त्रित एवं उद्घाटित। |
| २-१९७६ | मुरादाबाद | डा. जफर अहमद सिद्दीकी | डा. बी. एल. आत्रेय द्वारा उद्घाटित |
| ३-१९७७ | कोइलसा (आजमगढ़) | पद्मभूषण डा० जयदेवसिंह | -- |
| ४-१९७८ | साहिबाबाद (गाजियाबाद) | डा० शशधरदत्त | -- |
| ५-१९७९ | कानपुर | पं० उदयवीर शास्त्री | कानपुर वि० वि० के कार्यवाहक कुलपति प्रो० एन० अब्राहम द्वारा उद्घाटित। |
| ६-१९८० | (लखीमपुर खीरी) | डा० शिवशंकर राय | कानपुर वि०वि० की कुलपति श्रीमती डा० हेमलता स्वरूप द्वारा उद्घाटित। |
| ७-१९८१ | आगरा | डा० राज नारायण | आगरा वि० वि० के कुलपति डा० एस० एन० मेहरोत्रा द्वारा उद्घाटित |

इस वर्ष परिषद का अष्टम अधिवेशन बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज (रायबरेली) में आयोजित हो रहा है, जिसका उद्घाटन प्रो० बासुदेव सिंह, भूतपूर्व अध्यक्ष उ० प्र० विधान सभा एव वर्तमान, खाद्य एवं आपूर्ति मत्री उत्तर प्रदेश द्वारा शम्पन्न किया जा रहा है।

परिषद ने १९७५ से एक वार्षिक पत्रिका (द्विभाषीय) 'संदर्शन' का प्रकाशन आरम्भ किया है, जिसमें प्रमुखतया उन लेखों, भाषणों आदि को स्थान दिया जाता है, जो परिषद के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर प्रस्तुत किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त संघ प्रकाशित ग्रन्थों की समीक्षा, परिषद के अधिवेशन की रिपोर्ट, वार्षिक विवरण और उत्तर प्रदेश से भिन्न राज्यों की दर्शन से सम्बन्धित संस्थाओं की गतिविधियों आदि को भी पत्रिका में यथा सम्भव प्रकाशित किया जाता है। इसके अब तक सात खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस प्रकाशन को यथोचित सम्पन्न करते रहने का लगभग सम्पूर्ण श्रेय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफसर संगम लाल पांडेय और उनके सहयोगियों को है। यह पत्रिका परिषद के सदस्यों को निःशुल्क प्राप्त होती है, अतएव इसके प्रकाशन के व्यय की व्यवस्था का प्रमुख स्रोत सदस्यता शुल्क ही है। गांधी शताब्दी महाविद्यालय कोइलसा (आजमगढ़) से परिषद को प्रतिवर्ष प्राप्त होनेवाली सौ रुपये की सहायता के लिये परिषद उक्त संस्था के प्राचार्य और प्रबन्ध समिति की विशेषतया आभारी है।

परिषद की ओर से उसके कतिपय प्रमुख सदस्यों और पदाधिकारियों के सद्प्रयत्नों के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, इलाहाबाद ने इन्टरमीडियेट परीक्षा के लिये वैकल्पिक विषय के रूप में दर्शनशास्त्र को मान्यता प्रदान कर दी है। और हाईस्कूल परीक्षा के

लिये नैतिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है। इस दिशा में अन्य शेष, औपचारिकताओं के विषय में उत्तर प्रदेश प्रशासन द्वारा समुचित कार्यवाही किये जाने के लिये परिषद निरन्तर प्रयत्नशील है।

परिषद के पदाधिकारियों का निर्वाचन तीन वर्ष के लिये किया जाता है वर्ष १९८०–८३ के लिए निर्वाचित पदाधिकारी निम्नांकित हैं —

अध्यक्ष—प्रोफेसर संगमलाल पांडेय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

उपाध्यक्ष—प्रोफेसर लक्ष्मी सक्सेना, गोरखपुर विश्वविद्यालय।

मंत्री—डा० एस० पी० श्रीवास्तव, युवराज दत्त महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी (कानपुर विश्वविद्यालय)।

संयुक्त मंत्री—डा० जे० पी० अवस्थी, आगरा कालेज, आगरा (आगरा विश्वविद्यालय)।

सहायक मंत्री—श्री एम० बी० लाल, मुरादाबाद।

कोषाध्यक्ष—डा० राम लाल सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

इस वर्ष के अष्टम अधिवेशन के आयोजन के लिये परिषद बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज (रायबरेली) के दर्शनशास्त्र के अध्यक्ष श्री राम प्रकाश सिंह और सुविज्ञ प्राचार्य डा० अमलधारी सिंह की आभारी हैं। हम इस महाविद्यालय के उदारमना यशस्वी अध्यक्ष श्रीमान लाल साहब; और इस अधिवेशन को सम्पन्न कराने के लिए सर्वाधिक श्रेय के अधिकारी, उत्तर प्रदेश हिन्दी जगत् के मूर्धन्य मनीषी श्रद्धेय डा० कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। इस महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के सभी सदस्य और इस कालेज के सभी प्राध्यापक एवं कर्मचारी इस अधिवेशन की सफलता के भागीदार, और हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। परिषद इस श्रेष्ठ महाविद्यालय का आतिथ्य लाभ कर गौरवान्वित है।

इस अधिवेशन के उदघाटन समारोह के मुख्य अतिथि, उत्तर प्रदेश शासन के वरिष्ठ मंत्री, और उ० प्र० विधान सभा के भूतपूर्व यशस्वी अध्यक्ष, प्रोफसर वासुदेव सिंह जी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं, कि उन्होंने हमारे इस आयोजन के लिए न केवल अपने अति व्यापृत कार्यक्रमों में से समय दिया है, वरन् व्यक्तिगत रूप से दिल्ली के अति प्रचारित एशियाड के उद्घाटन के समय उपस्थित होने का अपना कार्यक्रम निरस्त कर दिया है। अकेडेमिक गतिविधियों के प्रति उनकी यह निरभिमान संलग्नता सर्वथा वरेण्य और वन्दनीय है। इस अधिवेशन के मनोनीत सामान्य अध्यक्ष, विद्वत् शिरोमणि डा० बद्री नाथ जी, भूतपूर्व कुलपति श्री सम्पूर्णानन्द वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रति हम अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हैं। विशिष्ट व्याख्यान दाता मूर्धन्य मनीषियों, विभिन्न विभागों के ख्यातनामा विद्वान अध्यक्षों, और गोष्ठियों के श्रेष्ठ प्रमुख वक्ताओं, और अधिवेशन के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सभी विद्वान सहयोगियों, सहवर्गियों और सदस्यों का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। अधिवेशन की सफलता का श्रेय इन्हीं सब को है।

**एस० पी० श्रीवास्तव**
मंत्री
उ० प्र० द० परिषद

# बैसवारा एक दृष्टि में

—चन्द्र प्रकाश पाण्डेय

शक्तिपीठ :

संकठा जी (गेगासों) चंद्रिका जी (बक्सर) अम्बिका जी (मुरारमऊ) पार्वती जी (सतांव) काली जी (भनवाँमऊ) कात्यायिनी जी (नौबस्ता) आनन्दी देवी (भीतर गांव) दुर्गा देवी (शंकर पुर) संदोही देवी (बीघापुर) मंगला देवी (सरेनी) कालिका देवी (सुमेरपुर) काली जी (कुम्हरौरा) कालिका देवी (मलिहाडीह) मंशा देवी (रायबरेली दुर्गादेवी (शकरपुर)।

शिव पीठ :

बाल्हेश्वर (ऐहार) मुण्डमालेश्वर (गेगासों) कामेश्वर (दौलतपुर) धूतेश्वर (धूता) सोहोलेश्वर (पूरे पाण्डेय) गहिरेश्वर (गहिरी) झारखण्डेश्वर (जगतपुर) सिद्धेश्वर (सरायं श्री बक्श) मिलखेश्वर (मिलखा) गोदावरेश्वर (बीघापुर)।

ऋषीश्वर -

गर्गाचार्य (गेगासों) च्यवन (चिलौला) शृंगी (सिघौर तारा) दालभ्य (डलमऊ) जाबालि (जलालपुर) गोकर्ण (गोकर्णा घाट) भद्रर्षि (बक्सर) अश्विनी कुमार (असनी) भृगु (भिटौरा) पुंजराज (गेगासों) भटमुनि (गेगासों) अनग बोधाश्रम असनी)।

विशेष :

ऊँचाहर रेलवे स्टेशन से लगभग आठ किमी दूर रामनगर ग्राम (नौबस्ता गंगाघाट) में धीवर कन्या से महाराजा शांतनु ने पाणिग्रहण किया था। इसी ग्राम में भीष्म पितामह ने आजन्म ब्रह्मचर्य का व्रत ग्रहण किया था।

२. वर्तमान असोथर जिला फतेहपुर आचार्य द्रोण का मूल निवास कहा जाता है, जो कभी अश्वात्थामा ग्राम था। कहते हैं गेगासों के निकट कभी अश्वात्थामा और द्रोण ने भी तपस्या की थी।

साहित्यकार,

मुल्ला दाउद—सूफी कवि—डलमऊ, जायसी से २०० वर्ष पूर्व

१. लालचदास—१५८५, भागवत दशम स्कंध भाषा, हरि चरित्र
२. क्षेमबंदीजन—१५५६, हुमायूं के शासनकाल के समय, ग्रंथ अनुपलब्ध
३. लालनदास—१६६२ डलमऊ के निवासी थे।
४. दूलनदास—१७१७ तदीपुर धर्मे
५. पहलवानदास—१७७६ भीखीपुर १९०० में अवसान. मुक्तवन, अरिल्ल आदि।
६. रामबक्स सत्यनामी १८०० सैंबसी ग्राम (लालगंज)
७. बंदी वेनीजन—१८१४ वैंती कल्याण पुर (डलमऊ)

८. भौन कवि–१८२८ वेंती कल्याणपुर (डलमऊ)
९. गिरधारी द्विवेदी १८४३ सातनपुर (लालगंज)
१०. अयोध्या प्रसाद वाजपेयी 'औघ' १८६४, सातनपुर (लालगंज)
११. वंशीधर वाजपेयी–१८७४ चिन्ताखेड़ा (भोजपुर)
१२. शम्भुरत्न मिश्र–१८७४ खजुरकांव (गेगासों)
१३. परमेश वंदीजन–१८७८ सतांव
१४. वादेराय भट्ट–१८८२ डलमऊ

भारतेन्दु काल

१५. पं० देवी दयाल वैद्य १८९३–१९३९ ककंशा (डलमऊ)
१६. दीनदयाल 'दयाल कवि) १८९५–१९१५ वेंती कल्यापुर
१७. पंचमदास–रचनाकाल १९२४, डलमऊ
१८. इन्द्रमणि–१९०० सतांव
१९. मिठ्ठीलाल 'मिलिन्द' –१९०२ डलमऊ
२०. अयोध्या प्रसाद 'अवधेश'–१९०३–१९३३ खजुरगांव
२१. शंकरदत्त भट्ट–१९२० सतांव खजुरगांव

द्विवेदी युग

२२. महावीरप्रसाद द्विवेदी—१९२१,–(२१–११–१८३९–दौलतपुर)
२३. ब्रजेश–१९२८–२०१४—नारेवर की गढ़ी, १० ग्रंथ
२४. शिवरत्न शुक्ल 'सिरस'–१९३६—बछरावाँ–३ दजंन ग्रथ
२५. अलोपीदीन भट्ट–१९३८–१९८८–सतांव
२६. विष्णु स्वरूप पाडेय १९३८–१९७१ बन्नावां, संगीतज्ञ भी थे।
२७. रूप नारायण पाण्डेय–१९४१–२०१५—गेगासों, ६० मौलिक ग्रंथ।
२८. शिव पाल अवस्थी—१९४१–कोन्सा ग्राम, ४ ग्रंथ
२९. अवध बिहारी–१९४७–उतरावां—२ दजंन ग्रंथ
३०. दयाशंकर वाजपेयी 'गिरीश'—१९४९–पूरे वाजपेयी (केलौनी)
३१. अवधेश मालवीय—१९५२–गेगासों ६ ग्रंथ
३२. तोरण देवी लली–१९५३–हमीरगांव
३३. रामनाथ शर्मा—१९५३–चन्दनिहाँ–७ ग्रंथ
३४. चौहर्या सिंह चौहान—१९५७–गोपियापुर (डलमऊ) ७ ग्रंथ
३५. रामावतार मिश्र—१९६३–तेरूखा डलमऊ)
३६. चंद्रिका प्रसाद वाजपेयी –१९६४—वाजपेयीपुर वेहटा कलां
३७ सालिग राम वाजपेयी 'द्विज' —१९६४–बरारा बुजुर्ग (डलमऊ) १० ग्रंथ
३८. देवीरत्न अवस्थी 'करील'—१९६६–बरदर, अनेकग्रंथ, वेदों का काव्य भाष्य
३९. गिरजाशंकर भट्ट 'शेखर'–१९६६–उमरामऊ–५ ग्रंथ
४०. सुखदेव मिश्र—१७००—दौलतपुर, अनेकग्रंथ

४१. धानकवि—डौडिया खेरा—दलेल प्रकाश
४२. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' १९९६—गढाकोला बीघापुर, क्रांतिधर्मा कवि
४३. नन्ददुलारे वाजपेयी—मगरायर—विद्वान आलोचक
४४. भगवती चरण वर्मा—उन्नाव जनपद—उपन्यासकार कथाकार, कवि
४५. भगवती प्रसाद वाजपेयी उन्नाव—उपन्यासकार
४६. द्वारिका प्रसाद मिश्र—बीघापुर भू० पू० मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश सरकार
४७. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (अचलगंज) क्रांतिकारी कवि
४८. गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'—सुमेरपुर—अनेक ग्रंथ
४९. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा—चिन्ता खेड़ा—मटेरिया डिवाइना के रचनाकार
५०. सूर्यकुमार पाण्डेय 'दिनेश' गेगासो—दिनेश दर्शन आदि
५१. हीरालाल वाजपेयी— पुरवा उन्नाव
५२. सिद्धनाथ शुक्ल— बीघापुर उन्नाव
५३. भास्कर दत्त दीक्षित—बीघापुर उन्नाव
५४. भावन कवि— मौरावाँ उन्नाव
५५. शिव दयाल— बेंती कल्याणपुर (डलमऊ)
५६. जगन्नाथ अवस्थी— सुमेरपुर (उन्नाव)
५७. श्रीलाल शुक्ल—मोहनलालगज (लखनऊ) निदेशक सूचना प्रसारण उ० प्र०
५८. अमर बहादुर सिंह 'अमरेश'—कंदरावाँ (डलमऊ)
५९. ब्रजनन्दन पाण्डेय—लालगज
६०. डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन'—उन्नाव अध्यक्ष हिन्दी संस्थान उ० प्र०
६१. गिरजाशंकर त्रिवेदी—भोजपुर नवनीत बम्बई
६२. डा० कृष्ण दत्त वाजपेयी रायपुर मझिगवाँ, विद्वान मर्मज्ञ
६३. रमाकांत श्रीवास्तव—पूरे मोहन (लालगज) स्वतत्र भारत
६४. भवंर सिंह 'भंवरेश—चिलौला (लालगंज)
६५. डा० शिव बाहदुर सिंह भदौरिया धन्नीपुर (लालगंज)
६६. राम मनोहर—मिश्रखेड़ा लालगंज भूतपूर्व मंत्री महाराष्ट्र सरकार
६७. राम प्यारे नीलम—मैदेमऊ (लालगंज)
६८. उपेन्द्र बहादुर सिंह देवली (लालगंज)
६९. हरेन्द्र बहादुर सिंह—चांदा (लालगंज)
७०. मुरलीधर शुक्ल 'निर्लेप—काल्ही गांव लालगंज
७१. चन्द्रप्रकाश पाण्डेय लालगंज
७२. ब्रजनाथ सिंह—एकौनी (लालगज)

स्वतंत्रता सैनिक :

[१] राणा बेनीमाधव—शंकरपुर—अंग्रेजीशासन के प्रबल साम्राज्य के विरोध में अमर सेनानी।
[२] बीरा पासी—भीरा गोविंदपुर—राणा बेनी माधव का प्रमुख सहयोगी।

[३] राव रामबक्श सिंह—डौड़ियारखेड़ा [उन्नाव] जिन्हें सातवीं बार फाँसी देकर अंग्रेजी हुकूमत दम ले सकी।

[४] चन्द्रशेखर तिवारी 'आजाद'—बदरका, [उन्नाव] अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध शक्तिमान सेनापति।

[५] विशम्भर दयाल त्रिपाठी—[उन्नाव] महान क्रांतिवादी राजनीतिज्ञ

[६] मुंशी सत्य नारायण—बकुलिहा [लालगंज] यशस्वी क्रांतिवादी

[७] शिव बालक मुंशीगंज गोली काण्ड के अमर शहीद

पंचम पासी किसान

नन्हू नाऊ

सुक्खी

दुक्खी

[८] माता प्रसाद मिश्र—कोन्सा मुंशीगंज गोलीकाण्ड के बंदी क्रांतिकारी

[९] प्रभूदयाल शुक्ल [उन्नाव] यशस्वी क्रांतिकारी

[१०] ठा० गुप्तार सिंह—रामपुर कलाँ सरेनी प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनिक एवं स्वर्गीय विधायक

[११] महाबीर त्रिवेदी बकुलिहा लगान काण्ड के अमर सेनानी

गार्गीदीन मिश्र

ललई दीक्षित

[१२] मोदान सिंह

टिर्री सिंह

सुक्खू सिंह सरेनी गोली कांड के अमर शहीद

महादेव सिंह

रामशंकर

[१३] सूर्यप्रसाद त्रिपाठी 'सुरजू तिवारी'—सरेनी—सरेनी गोली काण्ड के जिन्हें बर्बर यातनायें दी गई।

[१४] रामशंकर द्विवेदी—कोरिहर सतांव—भू पू० परिषद अध्यक्ष एवं स्वतंत्रता सैनिक

[१५] चन्द्रिका प्रसाद बाजपेयी

[१६] मदन मोहन मिश्र वेहटा कलाँ।

संगीतकार :

[१] डा० सुरेन्द्र शंकर अवस्थी — सुमेरपुर [उन्नाव] प्राचार्य भातखण्डे संगीत विद्यालय

(२] स्व० महनारायण पाण्डेय—सैम्बसी [लालगंज] यशस्वी सिद्ध ढोलक वादक

[३] प्यारेलाल शुक्ल—सुमेरपुर [उन्नाव] सुप्रसिद्ध सितारवादक

[४] बद्री शुक्ल—सुमेरपुर—नर्तक

[५] रामधीन पाण्डेय—मनलामउ—गायक

[६] शिवपाल सिंह चौहान—गोपियापुर—गायक

[७] सूर्य मणि—कथिक उतरपारा—गायक

[८] महाबीर—कथिक—महेरू—गायक

जनपद रायबरेली

क्षेत्रफल–४५५४ वर्ग कि.मी., जनसंख्या–१८,८८,४०० (१६८१) परिक्षेत्र—४, विकास खण्ड–१६, पुलिस स्टेशन–२१, टाउन एरिया–६, नगर पालिका–२, अस्पताल—१९/२५ एलो०, ३/११ आयु०, २ यूना०, ३ होमियो०, पी० एच०सी०—१८, पशु चिकि०—२३, कृत्तिम गर्भा ३४/३५, ग्राम सभायें–१३३८, सहकारी बैंकें–१७, भू० वि० बैंकें–५, व्यावसायिक बैंकें–५४, महाविद्यालय–५, महा वि०–४७ बेसिक पाठशालायें–१२६१, प्राविधिक शिक्षा संस्थान—२, पक्के मार्ग–१२८ किमी०, नहरें–१४७५ वर्ग किमी० ।

## विशेष:—

卐 डलमऊ में मौर्यकालीन भग्नावशेष प्राप्त हुये हैं। मौर्य साम्राज्य के अंतिम शासक 'ब्रहद्रथ' को 'पुष्यशुंग' ने पराजित किया था और 'शुंग' के आधिपत्य में बैसवारे की बागडोर चली गई।

卐 ई०पू० ६३ में 'कण्व वंश' के शासन में ४५ वर्ष तक यह क्षेत्र रहा।

卐 ७८ से १०२ ई० में 'कनिष्क' के शासन में जिससे अयोध्या के 'कुषाण' शासकों ने छीन लिया। बाद में 'मित्रवंश' का साम्राज्य रहा, जिसका अंतिम शासक 'कुमुद' था।

卐 ईसा के बाद चौथी शताब्दी में चन्द्र गुप्त प्रथम (३२० ई०) के शासन में रहा। 'टांडा' ग्राम आदि की खुदाई में 'चन्द्रगुप्त' और स्कंध गुप्त के काल के सिक्के प्राप्त हुये हैं।

卐 आठवीं शताब्दी के चतुर्थांश में 'यशोवर्मन ने सारे भारत पर कब्जा कर लिया। जिसको ९४० में कश्मीर के ललितादित्य ने मार दिया पश्चात् आयुधवंशियों ने 'गूर्जर-प्रतिहारों' को पराजित करके नवीं दशवीं शताब्दी तक 'बैसवारा' क्षेत्र कब्जा में कर लिया।

卐 ६३६ में प्रसिद्ध इतिहासकार 'ह्वेन सांग' कन्नौज से बैसवारा होकर सलवन और प्रयाग गया था।

卐 ईसापूर्व तीसरे शतक में उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण मैदानी भाग में 'नागवंश' का अधिपति रहा है। हमारे दो स्थल थे–'मथुरा' और 'कन्तित' वर्तमान मिर्जापुर। यह 'नाग' 'शैव' थे। कालान्तर मे यही 'भारशिव कहलाये।

卐 भारशिवों का बैसवाड़े में अंतिम शासक 'कोट' रहा है।

卐 भारशिवो ने सारे बैसवाडे में बक्सर, डलमउ, रायबरेली, सलवन सुदामापुर ककोरन आदि में शासन किया।

卐 कौन्नोज के हर्षवर्धन ने ६०६—६४९ के मध्य यहां की पत्तन को भारशिवों से छीन लिया।

卐 ६०३ हिजरी में जौनपुर के शासक शाह इब्राहीमशर्की के डलमऊ ने शासक डानदेव' को ठीक होली के दिन मार दिया। इसी संघर्ष में उनके भाई 'डाल देव' भी मारे गये।

卐 अहीर भरोहिया स्त्रियाँ आज भी बिछुआ नहीं पहनाती।

卐 शरद काल में यह अहीर चखरौली (डलमऊ) में 'भारशिवों' की मजार पर दूध चढाते हैं।

卐 जनश्रुति के अनुसार 'अहीर' और 'पासी' जातियाँ बैसवाड़े की ट्राइबल जातियाँ थीं।

卐 भारशिव भवान (भाँव) हरदेव (हरदोई) ककोरन (सुदामापुर) थूल (थुलैंडी) डल (डलमऊ) बल

(भरौली, फिर भरेली फिर बरेली) सभी भाई थे।

卐 अन्तिम 'भारशिव' शासक कोट को 'अलाउद्दीन' के पुत्र ने मारा था।

卐 बक्सर (उन्नाव) में भारशिवों से अभय चन्द्र, निर्भय चन्द ने कई लड़ाइयाँ लड़ीं। जिनमें अभय चंद मारे गये। बाद में इन्हीं के वशज कर्त्ताराम ने भरों को पराजित किया। फिर ८२० में शर्कीशाह इब्राहीम ने पहला धावा डलमऊ पर किया।

卐 खखोर पठानों का शासन भी रहा (गजेटियर १८८४)

卐 कोट की सादिन मस्जित में ५९० और ६९८ हिजरी के दो शिला लेख मिलते हैं जिनमें भरों की पराजय और अलाउद्दीन के शासन का जिक्र है।

इस प्रकार बैसवाड़ा क्षेत्र निरंतर संघर्षशील रहा अंग्रेजी हुकूमत में भी १८५९ से १९४९ तक संघर्ष का सिलसिला बैसवारे की अमर थाती है।

वैसवाड़ा अध्यात्म, साहित्य और शौर्य का त्रिवेणी स्थल रहा है।

# मुक्ति-संग्राम में बैसवारा का योगदान

—महादेव सिंह

सहिमामयी भागीरथी की पावन धारा, प्रकृति द्वारा परिवेष्ठित इसविशिष्ट बैसवारा भूमि को अमृतमय जल से सिंचित करती रही है। बैसवारा भूमि कलम के धनी महान प्रतिभाशाली कवियों व लेखकों की साधना—भूमि रही है साथ ही जुझारू रणबाकुरों ने यहां की मिट्टी को अपने रक्त से रंग कर स्वर्णिम इतिहास का सृजन किया। यह क्षेत्र न केवल उत्तर प्रदेश में ही अपितु समस्त देश में लड़ाकू सैनिकों के लिए प्रसिद्ध है। बैसवारा भू—भाग 'बैस' क्षत्रियों द्वारा पर्याप्त समय तक शासित रहा। राजा तिलोक चन्द्र ने सन् १८६० ई० के आस-पास अपने प्रभुत्व को बढ़ाते हुए राज्य का पुनरूद्धार किया। इस क्षेत्र के निवासियों ने बैस राजाओं का आभार माना और पूरे क्षेत्र को 'बैसवारा' के रूप में एक नयी संज्ञा दी गयी। यहां की संस्कृति इस नवीन नामकरण के पश्चात विशिष्टता को प्राप्त करती गयी। यह विशिष्टता आज भी परिलक्षित है। यहां के लोग आत्म सम्मान, परोपकार, उदारता, रसिकता एवं संघर्षशीलता आदि गुणों के कारण अलग से पहचाने जा सकते हैं।

मुगल काल में लखनऊ के नवाबों से बैसवारा के लोगों की बराबर लड़ाई थी। किन्तु अवध की नवाबी छूटने के पश्चात सहायता की याचना करने वाली अवध की लड़ाकू बेगम हजरत महल तथा उसके पुत्र की रक्षा के लिए तलवार के धनी बैसवारी वीरों ने अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया और स्वतन्त्रता के हितार्थ प्राणपण से अंग्रेजों के विरुद्ध अनवरत संघर्ष में कूद पड़े। सन् १९५७ ई० के स्वाधीनता संग्राम में लखनऊ को प्रमुख युद्ध का केन्द्र बनना पड़ा जिसमें समस्त देश के वीरों के साथ ही साथ अप्रतिम वीरता का परिचय देने वालों में बैसवारा के स्वनामधन्य सपूत ही अग्रिम पंक्ति में थे। . . . . .

अंग्रेजों को असली लड़ाई तो अवध के गांव-गांव में लड़नी पड़ी, मुख्यतः अवध के केन्द्र बैसवारा में। बैसवारा का गांव-गांव विद्रोही था। इस स्वतन्त्रता आन्दोलन की चेतना का नेतृत्व शौर्य के स्वरूप शंकरपुर के राणा वेनीमाधव सिंह ही कर रहे थे। राणा साहब महारानी लक्ष्मी बाई एवं वीर शिरोमणि कुंवर सिंह की भांति भारतीय इतिहास में देश भक्त कुशल सेनापति के रूपमें याद किये जाते रहेंगे। राणा बेनी माधव सिंह अपने देश वासियों की मानसिकता से भली भांति परिचित थे। एक समय उनके पास अस्सी हजार के आस पास सैनिक थे। उन्हें जनता का विश्वास प्राप्त था। उनके आतंक से सर होप ग्रान्ट जैसा कुशल अंग्रेज सेनापति लखनऊ छोड़ कर बाहर निकलने से घबराता था।

सन् १८५८ ई० में अमेठी नरेश लाल माधव के समर्पण के पश्चात अंग्रेज सेनाएं शंकर पुर पर चढ़ आयीं। तीन ओर से घेरेबन्दी के बावजूद भी राणा की सेना ने मशालों के सहारे घमासान युद्ध किया। राणा अपने खजाने एवं सैनिकों के साथ सुरक्षित किले से बाहर निकल गये अंग्रेजों ने भीरा के निकट राणा से पुन: घमासान युद्ध किया वे अर्धचेतनावस्था में डौड़ियाखेरा पहुंचे। डौड़ियाखेरा की जंग और भी

भयंकर थी। अनेक अंग्रेज हताहत हुए बहुत से स्वतंत्रता–संग्राम–सेनानी भी वीरगति को प्राप्त हुए किन्तु राणा को पकड़ने में समर्थ न हो सके।

देश पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया राणा का राज्य अंग्रेजों के चाटुकारों तथा स्वार्थी ताल्लुकेदारों के बीच बाट दिया गया किन्तु राणा की जलायो हुई ज्योति स्वतन्त्रता प्रेमियों के लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत बनी रही देश की जनता उन्हें तथा उनके त्याग एवं बलिदान को कभी नहीं भुला सकती। स्वतन्त्रता की यह आग भीतर ही भीतर धधकती रही सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना के बाद समग्र देश तथा वैसवारा में स्वतन्त्रता आन्दोलन का नया दौर प्रारम्भ हुआ अंग्रेजों का दमन चक्र चलता रहा। भोले भाले किसान अंग्रेजों के चाटुकार ताल्लुकेदारों के शोषण के शिकार बनते रहे। परिणाम स्वरूप किसानों में संगठन की भावना वलवती हुई उनमें नव चेतना का संचार हुआ। ब्रिटिश हुकूमत तथा ताल्लुकेदारों के विरुद्ध उनकी आवाज तीव्रतर होती गयी और इसे रोकने के लिए अंग्रेजों ने निहत्थे भोले किसानों को गोलियों से भुनवा दिया जिसके आघात वे हसते हंसते अपने सीने पर अन्तिम सांसों तक सहते रहे।

मुंशीगंज का गोलीकान्ड एवं सरेनी का गोलीकाण्ड कृषकों के मुक्ति–संग्राम एवं अंग्रेजों की बर्बरता के परिणाम स्वरूप घटित हुए। लालगंज में रेलवे स्टेशन तथा पोस्ट आफिस पर नवयुवकों द्वारा हमले किये गये। नवयुवक गिरफ्तारियाँ देते रहे। भारत छोड़ो आँदोलन जोर पकड़ता गया। अंतत देश दासता की वेड़ियों से मुक्त होकर स्वाधीन हुआ। शहीदों की कुर्बानियां प्रतिफलित हुई। राष्ट्र में नवजागरण की लहर आयी समस्त नागरिक राष्ट्रीय पुर्नरचना में सन्नध हुए। वर्तमान समय में वैसवारा के लोगों का पावन कर्त्तव्य है कि विकास कार्यों में अपना तन-मन-धन अर्पित करें एवं अपने महान पूर्वजों के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए अन्याय-दमन-शोषण एवं अत्याचार के विरुद्ध अनवरत संघर्ष करें।

★

वक्त तो मेरी जाँ टल जायगा
बात कहने को रह जायगी

आदमी को चाहिये की
वक्त से डर कर रहे/

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद अष्टम अधिवेशन के अवसर पर

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद अष्टम अधिवेशन

के

अवसर पर

# हार्दिक - अभिनन्दन



नगर का एकमात्र छविगृह

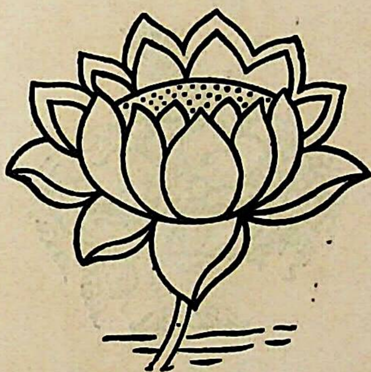
# लक्ष्मी टाकीज

प्रो० जयशंकर सिंह

लालगंज, रायबरेली

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद के अष्टम अधिवेशन पर हार्दिक

## शुभकामनायें

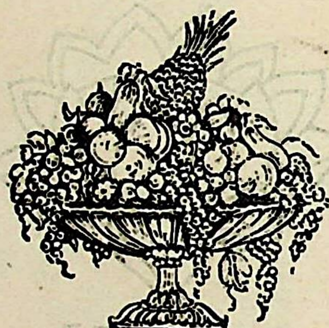


# लक्ष्मी कोल्ड स्टोरेज एन्ड आइस फैक्ट्री

## प्रो० डा० शीतला शंकर दीक्षित

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद अष्टम अधिवेशन के
अवसर पर

## हार्दिक शुभकामनायें



# राम देव - राजेन्द्र देव

**ग्रेन, आयल सीड मर्चेन्ट्स**

**एण्ड**

**कमीशन एजेन्ट्स**

* * *

**लालगंज, रायबरेली**

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद के आठवें अधिवेशन पर

## हार्दिक शुभकामनायें

भवन निर्माण के लिए सदैव उत्तम

संश्लेषक—

चूने का ही प्रयोग करें।

# राजेश लाइम उद्योग

नई बाजार, लालगंज, रायबरेली

# प्रान्तीय दर्शन परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर

प्रकाशित स्मारिका के

द्वारा

देश के कोने-कोने से आये अतिथियों का

## श्री शिवभजन लाल जनहित इन्टर कालेज

रामपुर-मझिगवाँ (रायबरेली)

## हार्दिक अभिनन्दन करता है ।

विकास क्षेत्र सरेनी के अन्तर्गत आचार्य महावीर प्रसाद द्विवदी मार्ग के सन्निकट स्थित महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर सेवारत है ।

### परीक्षाफल

| वर्ष | हाई स्कूल | इण्टर |
|---|---|---|
| 1964 | 64 | — |
| 1965 | 58 | — |
| 1966 | 91 | — |
| 1967 | 89 | — |
| 1968 | 92.5 | — |
| 1969 | 58 | 68 |
| 1980 | 63 | 68 |
| 1981 | 51 | 87 |
| 1982 | 75 | 60 |

उत्कृष्ट अनुशासन एवं परीक्षाफल के लिये सुविख्यात अनुशासन प्रिय एवं अध्ययनशील विद्यार्थियों के लिये सदैव तत्पर ।

| सत्यनारायण मिश्र | गुरूप्रसाद बाजपेयी | राजेन्द्रकुमार बाजपेयी |
|---|---|---|
| अध्यक्ष : | प्रबन्धक : | प्रधानाचार्य |

श्री शिवभजन लाल जनहित इण्टर कालेज
रामपुर—मझिगवाँ रायबरेली (उ०प्र०)

मंगल कामनाओं सहित :

# मिश्रा मशीनरी स्टोर्स

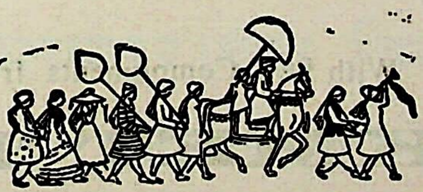
## लालगंज, (रायबरेली)

- ★ आयल इंजन
- ★ पम्पिंग सेट
- ★ बोरिंग पाइप
- ★ बिजली मोटर
- ★ एवं अन्य मशीनरी पार्ट्स के विक्रेता ।

निवेदक : राम शंकर मिश्र

---

शुभ कामनाओं सहित :



# रेडीमेड कपड़ों के प्रसिद्ध

## विक्रेता :

**शिव किशोर त्रिपाठी (लल्लू त्रिपाठी)**

**पोस्ट आफिस के सामने लालगंज, (रायबरेली)**

उत्तर प्रदेश दर्शन-परिषद

के

अष्टम वार्षिक अधिवेशन पर

# हार्दिक शुभ कामनायें

प्रतिष्ठान :



## (१) अनिता नर्सिंग होम

डा० गोपेन्द्र कुमार गुप्त

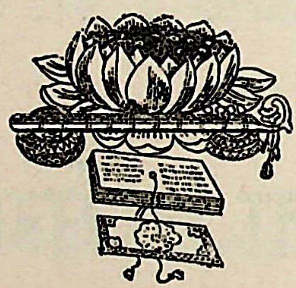
## (२) सेठ शिवनारायण विद्या मन्दिर

बछरावाँ रोड, लालगंज (रायबरेली)

## (३) सेठ शिवनारायण गोपी किशन सर्राफ

महात्मा गांधी मार्ग, लालगंज

निवेदक : पन्ना लाल सर्राफ







With best compliments from : ☎ 79817



# जयपुर मूर्तिकला केन्द्र

# Jaipur moortikala kendra



बस्ट, स्टेच्यू, जैन

व

वैष्णव मूर्तियों के निर्माता,

विक्रेता एवं विशेषज्ञ



**Specialist & Manufacturers of :**

## BUSTS, STATUES, JAIN

**and**

## VAISHNAVA MOORTIES

प्रोप्राइटर – बनवारी लाल लल्ली राम शर्मा

Prop. **BANWARILAL LALIRAM SHARMA**

**KHEJARE - KA - RASTA, FOURTH SQUARE,**

**JAIPUR - 302 001.**

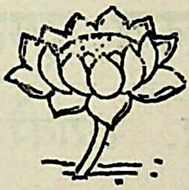
खेजड़े का रास्ता, चौथा चौराहा, जयपुर–302 001

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के आठवें अधिवेशन

पर

# हार्दिक

# शुभकामनायें



**श्री मदन फर्टलाइजर**
बेवर रोड, फतेगढ़

**दुर्गा ब्रान्ड एन० पी० के०**
के निर्माता

अधिक उपज के लिए—

**20-20-10, 15-15-7½**

**18- 9- 0, 10-10-10**

# प्रभात ट्रेडिंग एजेन्सीज

## लालगंज, रायबरेली

---

शुभ कामनाओं सहित :

## प्रान्तीय दर्शन परिषद के
## अष्टम अधिवेशन

के

शुभ अवसर

पर

## गोविन्द सिंह इण्टर कालेज

सीतापुर, (रायबरेली)

---

समस्त मंगल कामनाओं के साथ

# उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद

के

## आठवें अधिवेशन

पर

## जनता विद्यालय इण्टर कालेज

पूरे पाण्डे, रायबरेली



# हार्दिक शुभ कामनायें

## भारतीय विद्या प्रकाशन

| | |
|---|---|
| पोस्टबाक्स १०८<br>कचौड़ी गली<br>वाराणसी- १<br>पिन-२२१००१ | १ यू० बी० जवाहरनगर<br>बंग्लो रोड, दिल्ली<br>पिन-११०००७ |

भारतीय संस्कृति, वेद धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक।

**कतिपय प्रकाशन :—**

| पुस्तक | लेखक | मूल्य |
|---|---|---|
| १- करुणा कटाक्ष लहरी | डा० रसिक बिहारी जोशी | २०-०० |
| २-सांख्य दर्शन : विज्ञान भिक्षु भाष्य (संस्कृत भाष्य, हिन्दी अनुवाद सहित) | डा० रामशंकर भट्टाचार्य | ३०-०० |
| ३-सांख्य तत्त्व प्रदीप | डा० अमल धारी सिंह | ६-०० |
| ४-पातञ्जल योग सूत्र (राजा भोजदेव कृत राज मार्तण्ड वृत्ति ) | डा० अमल धारी सिंह | २०-०० |
| ५-मीमांसा दर्शन-जैमिनि मुनि (शाबर भाष्य-श्लोक वार्तिक-तन्त्रवार्तिक टुप टीका सहित) : प्रथम भाग | प्रो० गजानन्द मुगलगांवकर | ४०-०० |
| ६-तत्त्वार्थदीप निबन्ध | प्रो० केदार नाथ मिश्र | २०-०० |
| ७-बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन | डा० अमरनाथ पाण्डेय | ४०-०० |
| 8-Indian Idealism 2 vols. | P. S. Shastri | 110-00 |
| 9-Buddhist Logic : Th stcherbatsky (With Nyaya-bindutext) Introduction by R. V. Jhoshi | | 140-00 |
| 10-Conception of Buddhist Nirvana - Th Stcherliatsky 2nd. Edition | | 40-00 |
| 11-Some problems of Indian Literature M. Winternitz | | 30-00 |
| 12-Some problems in Navya Nyaya Dr. Gopika Mohan Bhattachayra | | 40-00 |
| 13-Nagarjuna's Philosophy—K. V. Ramanan | | 40-00 |
| 14-Indian Logie & Metaphysics—Dr. R. V. Joshi | | 60-00 |
| 15-Kalidasa : A Critical study : Dr. A. D. Singh | | 75-00 |

शुभकामनाओं सहित

# ओम प्रकाश रस्तोगी

लालगंज (रायबरेली)

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् के अष्टम् वार्षिक अधिवेशन

पर

# शुभ कामनाओं सहित

# बैसवारा प्रकाशन

लालगंज (रायबरेली)

**गोशाला**

हरेन्द्र बहादुर सिंह

**ब्रजमंञ्जरी**

ब्रजनन्दन

**सात समुन्दर पार**

सं० ओम प्रकाश सिंह

# बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज, रायबरेली

## प्राध्यापक—मण्डल

१– डॉ० अमल धारी सिंह प्राचार्य
२– डॉ० महेश सिंह (अध्यक्ष) इतिहास विभाग
३– प्रो० उपेन्द्र वहादुर सिंह (अध्यक्ष) हिन्दी विभाग
४– डॉ० बैजनाथ सिंह (अध्यक्ष) संस्कृत विभाग
५– प्रो० राकेश चन्द्र त्रिवेदी (अध्यक्ष) राजनीति विभाग
६– प्रो० राम सनेही जायसवाल (अध्यक्ष) भूगोल विभाग
७– प्रो० छोटेलाल सिंह (अध्यक्ष) अर्थशास्त्र विभाग
८– प्रो० बैजनाथ विश्वकर्मा (अध्यक्ष) अंग्रेजी विभाग
९– प्रो० हजारी सिंह (अध्यक्ष) समाज शास्त्र विभाग
१०– प्रो० व्रजभूषण सिंह (अध्यक्ष) सैन्य अध्ययन विभाग
११– प्रो० हरेन्द्र वहादुर सिंह, हिन्दी विभाग
१२– प्रो० सत्यनारायण सिंह, भूगोल विभाग
१३– प्रो० देवेन्द्र वहादुर सिंह, हिन्दी विभाग
१४– प्रो० निर्मल नाथ सिंह, सैन्य अध्ययन विभाग
१५– प्रो० महादेव सिंह, भूगोल विभाग
१६– प्रो० ओमप्रकाश सिंह, भूगोल विभाग
१७– प्रो० रामप्रकाश सिंह (अध्यक्ष) दर्शनशास्त्र विभाग
१८– प्रो० श्रीमती रेखा यादव, अंग्रेजी विभाग

## शिक्षणेतर

| | |
|---|---|
| श्री भोलाराम मौर्य एम० ए०, वी० लिव० एस–सी० | पुस्तकालयाध्यक्ष |
| श्री श्रीनाथ सिंह | प्रधान लिपिक एवं लेखाकार |
| श्री केदार सिंह | नैत्यिक लिपिक |
| श्री रामदुलारे सिंह | ,, ,, |
| श्री चन्द्र पाल सिंह | ,, ,, |
| श्री अवधेश कुमार सिंह | सैन्य अध्ययन–प्रयोगशाला सहायक |
| श्री शिवपल्टन सिंह | भूगोल–प्रयोगशाला सहायक |
| श्री हनोमान | दफ्तरी |

| | |
|---|---|
| श्री वचन | अरदली |
| श्री सालिगराम | चौकीदार |
| श्री वृद्धिलाल | माली |
| श्री बैजनाथ | जमादार चपरासी |
| श्री मातादीन | पुस्तकालय चपरासी |
| श्री किशन | स्वीपर |
| श्री विन्दादीन | भूगोल चपरासी |
| श्री शिवमोहन सिंह | चौकीदार |
| श्री राम कुमार | सैन्य अध्ययन चपरासी |
| श्री रामपाल | क्रीड़ा चपरासी |

उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद्

अष्टम् अधिवेशन

नवम्बर २०-२१-२२, १९८२

# त्रिदिवसीय सारस्वत समारोह

में

सम्मिलित होनेवाले

समस्त महानुभावों के प्रति

हार्दिक कृतज्ञता सहित

## बैसवारा डिग्री कालेज

परिवार

हिन्दी साहित्य भंडार ५५, चौपटियां रोड, लखनऊ-३ के सौजन्य से बन्धु प्रिंटिंग प्रेस, में मुद्रित ।